الجزء ١٣

وَمَآ اُبَرِّئُ نَفْسِىْ ۚ اِنَّ النَّفْسَ لَاَمَّارَةٌۢ بِالسُّوْٓءِ اِلَّا

मगर	बुराई	सिखाने वाला	नफ़्स	बेशक	अपना नफ़्स	और पाक (बेक़ुसूर) नहीं कहता

مَا رَحِمَ رَبِّىْ ؕ اِنَّ رَبِّىْ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٥٣﴾ وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِىْ

ले आओ मेरे पास	बादशाह	और कहा	53	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	मेरा रब	बेशक	मेरा रब	जिस पर रहम किया

بِهٖٓ اَسْتَخْلِصْهُ لِنَفْسِىْ ۚ فَلَمَّا كَلَّمَهٗ قَالَ اِنَّكَ الْيَوْمَ لَدَيْنَا

हमारे पास	आज	बेशक तुम	उस ने कहा	उस से बात की	फिर जब	अपनी ज़ात के लिए	उस को ख़ास करूँ	उस को

مَكِيْنٌ اَمِيْنٌ ﴿٥٤﴾ قَالَ اجْعَلْنِىْ عَلٰى خَزَآئِنِ الْاَرْضِ ۚ اِنِّىْ حَفِيْظٌ

हिफ़ाज़त करने वाला	बेशक मैं	ज़मीन (मुल्क)	ख़ज़ाने	पर	मुझे कर दे	कहा	54	अमीन	बाविक़ार

عَلِيْمٌ ﴿٥٥﴾ وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِى الْاَرْضِ ۚ يَتَبَوَّاُ مِنْهَا حَيْثُ

जहां	उस से (में)	वह रहते	ज़मीन में (मुल्क पर)	यूसुफ़ (अ) को	हम ने क़ुदरत दी	और उसी तरह	55	इल्म वाला

يَشَآءُ ؕ نُصِيْبُ بِرَحْمَتِنَا مَنْ نَّشَآءُ وَلَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٥٦﴾

56	नेकी करने वाले	बदला	और हम ज़ाए नहीं करते	जिस को हम चाहते हैं	अपनी रहमत	हम पहुँचा देते हैं	चाहते वह

ع ٨ / ١

وَلَاَجْرُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَجَآءَ

और आए	57	परहेज़गारी करते	और थे वह	ईमान लाए	उन के लिए जो	बेहतर	और आख़िरत का बदला अलबत्ता

اِخْوَةُ يُوْسُفَ فَدَخَلُوْا عَلَيْهِ فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿٥٨﴾

58	वह न पहचाने	उस को	और वह	तो उन्हें पहचान लिया	उस के पास	पस वह दाख़िल हुए	यूसुफ़ (अ)	भाई

وَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ قَالَ ائْتُوْنِىْ بِاَخٍ لَّكُمْ مِّنْ اَبِيْكُمْ ۚ اَلَا تَرَوْنَ

क्या तुम नहीं देखते	तुम्हारे बाप से	तुम्हारा (अपना)	भाई	लाओ मेरे पास	कहा उस ने	उन का सामान	जब उन्हें तैयार कर दिया	और जब

اَنِّىْٓ اُوْفِى الْكَيْلَ وَاَنَا خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ﴿٥٩﴾ فَاِنْ لَّمْ تَاْتُوْنِىْ

मेरे पास न लाए	फिर अगर	59	उतारने वाला (मेहमान नवाज़)	बेहतरीन	और मैं	पैमाना	पूरा करता हूँ	कि मैं

بِهٖ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ عِنْدِىْ وَلَا تَقْرَبُوْنِ ﴿٦٠﴾ قَالُوْا سَنُرَاوِدُ عَنْهُ

उस के मुतअ़ल्लिक़	हम ख़ाहिश करेंगे	वह बोले	60	और न आना मेरे पास	मेरे पास	तुम्हारे लिए	तो कोई नाप नहीं	उस को

اَبَاهُ وَاِنَّا لَفٰعِلُوْنَ ﴿٦١﴾ وَقَالَ لِفِتْيٰنِهِ اجْعَلُوْا بِضَاعَتَهُمْ

उन की पूंजी	और तुम रख दो	अपने ख़िदमतगारों को	और उस ने कहा	61	ज़रूर करने वाले हैं (करना है)	और हम	उस का बाप

فِىْ رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُوْنَهَآ اِذَا انْقَلَبُوْٓا اِلٰٓى اَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ

शायद वह	अपने लोग	तरफ़	जब वह लौटें	उसको मालूम कर लें	शायद वह	उन के बोरों में

يَرْجِعُوْنَ ﴿٦٢﴾ فَلَمَّا رَجَعُوْٓا اِلٰٓى اَبِيْهِمْ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مُنِعَ مِنَّا

हम से	रोक दिया गया	ऐ हमारे अब्बा	वह बोले	अपना बाप	तरफ़	वह लौटे	पस जब	62	फिर आजाएं

الْكَيْلُ فَاَرْسِلْ مَعَنَآ اَخَانَا نَكْتَلْ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ﴿٦٣﴾

63	निगहबान हैं	उस के	और बेशक हम	नाप (ग़ल्ला) लाएं	हमारा भाई	हमारे साथ	पस भेज दें	नाप

और मैं अपने नफ़्स को पाक नहीं कहता, बेशक नफ़्स बुराई सिखाने वाला है, मगर जिस पर मेरे रब ने रहम किया, बेशक मेरा रब बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (53)

और बादशाह ने कहा उसे मेरे पास ले आओ कि उसे अपनी (ख़िदमत) के लिए ख़ास करूँ, फिर जब (मलिक) ने उस से बात की कहा बेशक तुम आज हमारे पास बाविक़ार, अमीन (साहबे एतिबार) हो। (54)

उस ने कहा मुझे (मुक़र्रर) कर दे मुल्क के ख़ज़ानों पर, बेशक मैं हिफ़ाज़त करने वाला, इल्म वाला हूँ। (55)

और उसी तरह हम ने यूसुफ़ (अ) को मुल्क पर क़ुदरत दी, वह उस में जहां चाहते रहते, हम जिस को चाहते हैं अपनी रहमत पहुँचा देते हैं, और हम बदला ज़ाए नहीं करते नेकी करने वालों का। (56)

और जो ईमान लाए और परहेज़गारी करते रहे, उन के लिए आख़िरत का बदला बेहतर है। (57)

और यूसुफ़ (अ) के भाई आए, पस वह उस के पास दाख़िल हुए तो उस ने उन्हें पहचान लिया और वह उस को न पहचाने। (58)

और जब उन का सामान उन्हें तैयार कर दिया तो कहा अपने भाई को मेरे पास लाओ जो तुम्हारे बाप (की तरफ़) से है, क्या तुम नहीं देखते कि मैं पैमाना पूरा (भर) कर देता हूँ और मैं बेहतरीन मेहमान नवाज़ हूँ। (59)

फिर अगर तुम उस को मेरे पास न लाए तो तुम्हारे लिए कोई नाप (ग़ल्ला) नहीं मेरे पास,और न मेरे पास आना। (60)

वह बोले हम उसके बारे में उस के बाप से ख़ाहिश करेंगे और हमें (यह काम) ज़रूर करना है। (61)

और उस ने अपने ख़िदमतगारों को कहा उन की पूंजी (ग़ल्ले की क़ीमत) उन के बोरों में रख दो, शायद वह उस को मालूम कर लें जब वह लौटें अपने लोगों की तरफ़, शायद वह फिर आजाएं। (62)

पस जब वह अपने बाप की तरफ़ लौटे, बोले ऐ हमारे अब्बा! हम से नाप (ग़ल्ला) रोक दिया गया, पस हमारे साथ हमारे भाई को भेजदें कि हम ग़ल्ला लाएं, और बेशक उसके निगहबान हैं। (63)

قَالَ هَلْ اٰمَنُكُمْ عَلَيْهِ اِلَّا كَمَآ اَمِنْتُكُمْ عَلٰٓى اَخِيْهِ مِنْ قَبْلُ ؕ

इस से पहले	उस के भाई के मुतअ़ल्लिक़	मैं ने तुम्हारा एतिबार किया	जैसे	मगर	उस के मुतअ़ल्लिक़	क्या मैं तुम्हारा एतिबार करूँ	उस ने कहा

فَاللّٰهُ خَيْرٌ حٰفِظًا ۪ وَّهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿٦٤﴾ وَلَمَّا فَتَحُوْا

उन्हों ने खोला	और जब	64	तमाम मेहरबानों से बड़ा मेहरबानी करने वाला	और वह	निगहबान	बेहतर	सो अल्लाह

مَتَاعَهُمْ وَجَدُوْا بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ اِلَيْهِمْ ؕ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا

ऐ हमारे अब्बा	बोले	उन की तरफ़ (उन्हें)	वापस कर दी गई	अपनी पूंजी	उन्हों ने पाई	अपना सामान

مَا نَبْغِيْ ؕ هٰذِهٖ بِضَاعَتُنَا رُدَّتْ اِلَيْنَا ۚ وَنَمِيْرُ اَهْلَنَا وَنَحْفَظُ اَخَانَا

अपना भाई	और हम हिफ़ाज़त करेंगे	अपने घर	और हम ग़ल्ला लाएंगे	हमारी तरफ़	लौटा दी गई	हमारी पूंजी	यह	क्या चाहते हैं हम

وَنَزْدَادُ كَيْلَ بَعِيْرٍ ؕ ذٰلِكَ كَيْلٌ يَّسِيْرٌ ﴿٦٥﴾ قَالَ لَنْ اُرْسِلَهٗ

हरगिज़ न भेजूँगा उसे	उस ने कहा	65	आसान (थोड़ा)	बोझ (ग़ल्ला)	यह	एक ऊंट	बोझ	और ज़ियादा लेंगे

مَعَكُمْ حَتّٰى تُؤْتُوْنِ مَوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ لَتَاْتُنَّنِيْ بِهٖٓ اِلَّآ اَنْ

यह कि	मगर	तुम ले आओगे ज़रूर मेरे पास उस को	अल्लाह	से (का)	पुख़्ता अ़हद	तुम दो मुझे	यहां तक	तुम्हारे साथ

يُّحَاطَ بِكُمْ ۚ فَلَمَّآ اٰتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ﴿٦٦﴾

66	निगहबान (ज़ामिन)	जो हम कहते हैं	पर	अल्लाह	कहा उस ने	अपना पुख़्ता अ़हद	उन्हों ने उसे दिया	फिर जब	तुम्हें	घेर लिया जाए

وَقَالَ يٰبَنِيَّ لَا تَدْخُلُوْا مِنْۢ بَابٍ وَّاحِدٍ وَّادْخُلُوْا مِنْ

से	और दाख़िल होना	एक दरवाज़ा	से	तुम न दाख़िल होना	ऐ मेरे बेटो	और उस ने कहा

اَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ ؕ وَمَآ اُغْنِيْ عَنْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ

किसी चीज़ (बात) से	अल्लाह	से (की)	तुम से (को)	और मैं नहीं बचा सकता	जुदा जुदा	दरवाजे से

اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۚ وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ

पस चाहिए भरोसा करें	और उस पर	मैं ने भरोसा किया	उस पर	अल्लाह का	सिवा	हुक्म	नहीं

الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَلَمَّا دَخَلُوْا مِنْ حَيْثُ اَمَرَهُمْ اَبُوْهُمْ ؕ مَا كَانَ

नहीं था	उन का बाप	उन्हें हुक्म दिया	जहां से	वह दाख़िल हुए	और जब	67	भरोसा करने वाले

يُغْنِيْ عَنْهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ اِلَّا حَاجَةً فِيْ نَفْسِ

दिल	में	एक ख़ाहिश	मगर	किसी चीज़ (बात)	से	अल्लाह	से (की)	उन से (उन्हें)	वह बचा सकता

يَعْقُوْبَ قَضٰىهَا ؕ وَاِنَّهٗ لَذُوْ عِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنٰهُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ

अक्सर	और लेकिन	हम ने उसे सिखाया	उस का जो	साहबे इल्म	और बेशक वह	वह उसे पूरी कर ली	याकूब (अ)

النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٨﴾ وَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰٓى اِلَيْهِ ع ٨ ١١ ٢

अपने पास	उस ने जगह दी	यूसुफ़ (अ) के पास	वह दाख़िल हुए	और जब	68	नहीं जानते	लोग

اَخَاهُ قَالَ اِنِّيْٓ اَنَا اَخُوْكَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٦٩﴾

69	वह करते थे	उस पर जो	सो तू ग़मगीन न हो	मैं तेरा भाई	बेशक मैं	उस ने कहा	अपना भाई

उस ने कहा मैं उस के मुतअ़ल्लिक़ तुम्हारा क्या एतिबार करूँ मगर जैसे इस से पहले मैं ने उस के भाई के मुतअ़ल्लिक़ तुम्हारा एतिबार किया, सो अल्लाह बेहतर निगहबान है, और वह तमाम मेह्रबानों से बड़ा मेह्रबानी करने वाला है। (64)

और जब उन्हों ने अपना सामान खोला तो उन्हों ने अपनी पूंजी पाई जो वापस कर दी गई थी उन्हें, बोले, ऐ हमारे अब्बा! (और) हम क्या चाहते हैं? यह हमारी पूंजी है, हमें लौटा दी गई है, और हम अपने घर ग़ल्ला लाएंगे और हम अपने भाई की हिफ़ाज़त करेंगे, और एक ऊंट का बोझ ज़ियादा लेंगे, यह (जो हम लाएं हैं) थोड़ा ग़ल्ला है। (65)

उस ने कहा मैं उसे हरगिज़ न भेजूंगा तुम्हारे साथ, यहां तक कि तमु मुझे अल्लाह का पुख़्ता अ़हद दो कि तुम उसे मेरे पास ज़रूर ले कर आओगे, मगर यह कि तुम्हें घेर लिया जाए, फिर जब उन्हों ने उसे (याक़ूब अ) को पुख़्ता अ़हद दिया, उसने कहा जो हम कह रहे हैं उस पर अल्लाह ज़ामिन है। (66)

और कहा ऐ मेरे बेटो! तुम सब दाख़िल न होना एक (ही) दरवाज़े से, (बल्कि) जुदा जुदा दरवाज़ों से दाख़िल होना, और मैं तुम्हें बचा नहीं सकता अल्लाह की किसी बात से, अल्लाह के सिवा किसी का हुक्म नहीं, उस पर मैं ने भरोसा किया, पस चाहिए उस पर भरोसा करें भरोसा करने वाले। (67)

और जब वह दाख़िल हुए जहां से उन्हें उन के बाप ने हुक्म दिया था, वह उन्हें नहीं बचा सकता था अल्लाह की किसी बात से, मगर याक़ूब (अ) के दिल में एक ख़ाहिश थी सो वह उस ने पूरी कर ली, और बेशक वह साहबे इल्म था उस का जो हम ने उसे सिखाया था, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (68)

और जब वह यूसुफ़ के पास दाख़िल हुए उस ने अपने भाई को अपने पास जगह दी, कहा बेशक मैं तेरा भाई हूँ, जो वह करते थे तू उस पर ग़मगीन न हो। (69)

فَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ جَعَلَ السِّقَايَةَ فِيْ رَحْلِ اَخِيْهِ

अपना भाई	सामान	में	पीने का प्याला	रख दिया	उन का सामान	उन्हें तैयार कर दिया	फिर जब

ثُمَّ اَذَّنَ مُؤَذِّنٌ اَيَّتُهَا الْعِيْرُ اِنَّكُمْ لَسٰرِقُوْنَ ﴿٧٠﴾

70	अलबत्ता चोर हो	बेशक तुम	ऐ क़ाफ़िले वालो	मुनादी करने वाला	एलान किया	फिर

قَالُوْا وَاَقْبَلُوْا عَلَيْهِمْ مَّاذَا تَفْقِدُوْنَ ﴿٧١﴾ قَالُوْا نَفْقِدُ صُوَاعَ

पैमाना	हम गुम कर बैठे (नहीं पाते)	उन्हों ने कहा	71	तुम गुम कर बैठे	क्या है जो	उन की तरफ़	और उन्हों ने मुँह किया	वह बोले

الْمَلِكِ وَلِمَنْ جَآءَ بِهٖ حِمْلُ بَعِيْرٍ وَّاَنَا بِهٖ زَعِيْمٌ ﴿٧٢﴾

72	ज़ामिन	उस का	और मैं	एक ऊंट	बोझ	जो वह लाए	और उस के लिए	बादशाह

قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَّا جِئْنَا لِنُفْسِدَ فِي الْاَرْضِ

ज़मीन (मुल्क) में	कि हम फ़साद करें	हम नहीं आए	तुम ख़ूब जानते हो	अल्लाह की क़सम	वह बोले

وَمَا كُنَّا سٰرِقِيْنَ ﴿٧٣﴾ قَالُوْا فَمَا جَزَآؤُهٗٓ اِنْ كُنْتُمْ كٰذِبِيْنَ ﴿٧٤﴾

74	झूटे	तुम हो	अगर	सज़ा उस की	फिर क्या	उन्हों ने कहा	73	चोर (जमा)	और हम नहीं

قَالُوْا جَزَآؤُهٗ مَنْ وُّجِدَ فِيْ رَحْلِهٖ فَهُوَ جَزَآؤُهٗ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِي

हम सज़ा देते हैं	उसी तरह	उस का बदला	पस वही	उस के सामान में	पाया जाए	जो - जिस	उस कि सज़ा	कहने लगे वह

الظّٰلِمِيْنَ ﴿٧٥﴾ فَبَدَاَ بِاَوْعِيَتِهِمْ قَبْلَ وِعَآءِ اَخِيْهِ ثُمَّ

फिर	अपना भाई	ख़ुरजी (बोरा)	पहले	उन की ख़ुरजियों (बोरों) से	पस शुरूअ किया	75	ज़ालिमों को

اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِّعَآءِ اَخِيْهِ ؕ كَذٰلِكَ كِدْنَا لِيُوْسُفَ ؕ مَا كَانَ

न था	यूसुफ़ के लिए	हम ने तदबीर की	इसी तरह	अपना भाई	बोरा	से	उस को निकाला

لِيَاْخُذَ اَخَاهُ فِيْ دِيْنِ الْمَلِكِ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ نَرْفَعُ

हम बुलन्द करते हैं	अल्लाह चाहे	यह कि	मगर	बादशाह का दीन	में	अपना भाई	वह ले सकता

دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ؕ وَفَوْقَ كُلِّ ذِيْ عِلْمٍ عَلِيْمٌ ﴿٧٦﴾ قَالُوْٓا اِنْ

अगर	बोले	76	एक इल्म वाला	साहबे इल्म	हर	और ऊपर	चाहें हम	जो - जिस	दरजे

يَّسْرِقْ فَقَدْ سَرَقَ اَخٌ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ ۚ فَاَسَرَّهَا يُوْسُفُ فِيْ نَفْسِهٖ

अपने दिल में	यूसुफ़ (अ)	पस उसे छुपाया	उस से क़ब्ल	उस का भाई	तो चोरी की थी	उस ने चुराया

وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ ۚ قَالَ اَنْتُمْ شَرٌّ مَّكَانًا ۚ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ

ख़ूब जानता है	और अल्लाह	दरजे में	बदतर	तुम	कहा	उन पर	और वह ज़ाहिर न किया

بِمَا تَصِفُوْنَ ﴿٧٧﴾ قَالُوْا يٰٓاَيُّهَا الْعَزِيْزُ اِنَّ لَهٗٓ اَبًا شَيْخًا

बूढ़ा	बाप	उस का	बेशक	अज़ीज़	ऐ	कहने लगे	77	जो तुम बयान करते हो

كَبِيْرًا فَخُذْ اَحَدَنَا مَكَانَهٗ ۚ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٧٨﴾

78	एहसान करने वाले	से	हम देखते हैं बेशक तुझे	उस की जगह	हम में से एक	पस ले (रख ले)	बड़ी उम्र का

फिर जब उन का सामान तैयार कर दिया अपने भाई के सामान में (पानी) पीने का प्याला रखदिया, फिर एक मुनादी करने वाले न एलान किया ऐ क़ाफ़ले वालो! तुम अलबत्ता चोर हो। (70)
वह उन की तरफ़ मुँह कर के बोले, क्या है जो तुम गुम कर बैठे हो? (71)
उन्हों ने कहा, हम बादशाह का पैमाना नहीं पाते, और जो कोई वह लाएगा उस के लिए एक ऊंट का बोझ है (बारे शुतुर मिलेगा) और मैं उस का ज़ामिन हूँ। (72)
वह बोले अल्लाह की क़सम! तुम ख़ूब जानते हो हम (इस लिए) नहीं आए कि मुल्क में फ़साद करें, और हम चोर नहीं। (73)
फिर उन्हों ने कहा अगर तुम झूटे हो (झूटे निकले) फिर उस की क्या सज़ा है? (74)
कहने लगे उस की सज़ा यह है कि पाया जाए जिस के सामान में पस वही है उस का बदला, उस तरह हम ज़ालिमों को साज़ा देते हैं। (75)
पस उन की बोरों से (तलाश करना) शुरूअ किया अपने भाई के बोरे से पहले, फिर उस को अपने भाई के बोरे से निकाल लिया। इसी तरह हम ने यूसुफ़ (अ) के लिए तदबीर की वह बादशाह के दीन में (क़ानून के मुताबिक़) अपने भाई को न ले सकता था मगर यह कि अल्लाह चाहे (अल्लाह की मशिय्यत हो) हम दरजे बुलन्द करते हैं जिस के हम चाहें, और हर साहबे इल्म के ऊपर एक इल्म वाला है। (76)
बोले अगर उस ने चुराया तो चोरी कि थी उस से क़ब्ल उस के भाई ने, पस यूसुफ़ (अ) ने (उस बात को) अपने दिल में छुपाया और उन पर ज़ाहिर न किया, कहा तुम बदतर दरजे में हो और तुम जो बयान करते हो अल्लाह ख़ूब जानता है। (77)
कहने लगे, ऐ अज़ीज़! बेशक उस का बाप बड़ी उम्र का बूढ़ा है, पस उस की जगह हम में से एक को रख ले, हम देखते हैं कि तू एहसान करने वालों में से है। (78)

قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اَنْ نَّاْخُذَ اِلَّا مَنْ وَّجَدْنَا مَتَاعَنَا عِنْدَهٗٓ ۙ

उस के पास	अपना सामान	हम ने पाया	जिस को	सिवाए	हम पकड़ें	कि	अल्लाह की पनाह	उस ने कहा

ع ٩ ١١ ٣

اِنَّآ اِذًا لَّظٰلِمُوْنَ ﴿٧٩﴾ فَلَمَّا اسْتَيْـَٔسُوْا مِنْهُ خَلَصُوْا نَجِيًّا ۭ

मशवरा किया	अकेले हो बैठे	उस से	वह मायूस हो गए	फिर जब	79	अलबत्ता ज़ालिमों से	बेशक हम जब

قَالَ كَبِيْرُهُمْ اَلَمْ تَعْلَمُوْٓا اَنَّ اَبَاكُمْ قَدْ اَخَذَ عَلَيْكُمْ

तुम से	लिया है	तुम्हारा बाप	कि	क्या तुम नहीं जानते	उन का बड़ा	कहा

مَّوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ وَمِنْ قَبْلُ مَا فَرَّطْتُّمْ فِيْ يُوْسُفَ ۚ فَلَنْ

पस हरगिज़ न	यूसुफ़ (अ)	बारे में	जो तक़्सीर की तुम ने	और उस से क़ब्ल	अल्लाह	से (का)	पुख़्ता अ़हद

اَبْرَحَ الْاَرْضَ حَتّٰى يَاْذَنَ لِيْٓ اَبِيْٓ اَوْ يَحْكُمَ اللّٰهُ لِيْ ۚ وَهُوَ

और वह	हुक्म दे (तदबीर निकाले) अल्लाह मेरे लिए	या	मेरा बाप	मुझे	इजाज़त दे	यहां तक	ज़मीन	टलूँगा

خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿٨٠﴾ اِرْجِعُوْٓا اِلٰٓى اَبِيْكُمْ فَقُوْلُوْا يٰٓاَبَانَآ اِنَّ

बेशक	ऐ हमारे बाप	पस कहो	अपना बाप	तरफ़ (पास)	लौट जाओ तुम	80	सब से बेहतर फ़ैसला करने वाला

ابْنَكَ سَرَقَ ۚ وَمَا شَهِدْنَآ اِلَّا بِمَا عَلِمْنَا وَمَا كُنَّا

और हम न थे	हमें मालूम था	जो	मगर	और नहीं गवाही दी हम ने	चोरी की	तुम्हारा बेटा

لِلْغَيْبِ حٰفِظِيْنَ ﴿٨١﴾ وَسْـَٔلِ الْقَرْيَةَ الَّتِيْ كُنَّا فِيْهَا

उस में	हम थे	जो - जिस	बस्ती	और पूछ लें	81	निगहबान	ग़ैब के

وَالْعِيْرَ الَّتِيْٓ اَقْبَلْنَا فِيْهَا ۭ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿٨٢﴾ قَالَ بَلْ

बल्कि	उस ने कहा	82	सच्चे	और बेशक हम	उस में	हम आए	जो - जिस	और क़ाफ़ला

سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ۭ فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ۭ عَسَى اللّٰهُ

अल्लाह	शायद	अच्छा	पस सब्र	एक बात	तुम्हारा दिल	तुम्हारे लिए	बना ली है

اَنْ يَّاْتِيَنِيْ بِهِمْ جَمِيْعًا ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿٨٣﴾ وَتَوَلّٰى

और मुँह फेर लिया	83	हिक्मत वाला	जानने वाला	वह	बेशक वह	सब को	उन्हें	कि मेरे पास ले आए

عَنْهُمْ وَقَالَ يٰٓاَسَفٰى عَلٰى يُوْسُفَ وَابْيَضَّتْ عَيْنٰهُ مِنَ

से	उस की आँखें	और सफ़ेद हो गईं	यूसुफ़ (अ)	पर	हाए अफ़सोस	और कहा	उन से

الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيْمٌ ﴿٨٤﴾ قَالُوْا تَاللّٰهِ تَفْتَؤُا تَذْكُرُ يُوْسُفَ حَتّٰى

यहां तक कि	यूसुफ़ (अ)	याद करता	तू हमेशा रहेगा	अल्लाह की क़सम	वह बोले	84	घुट रहा था	पस वह	ग़म

تَكُوْنَ حَرَضًا اَوْ تَكُوْنَ مِنَ الْهٰلِكِيْنَ ﴿٨٥﴾ قَالَ اِنَّمَآ اَشْكُوْا

बयान करता हूँ	मैं तो सिर्फ़	उस ने कहा	85	हलाक होने वाले	से	या हो जाओ	बीमार	तुम हो जाओ

بَثِّيْ وَحُزْنِيْٓ اِلَى اللّٰهِ وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٦﴾

86	तुम नहीं जानते	जो	अल्लाह	से	और जानता हूँ	अल्लाह	तरफ़ सामने	और अपना ग़म	अपनी बेक़रारी

उस ने कहा अल्लाह की पनाह कि उसके सिवा हम (किसी और) को पकड़ें, जिस के पास हम ने अपना सामान पाया (उस सूरत में) हम ज़ालिमों से होंगे, **(79)**
फिर जब वह उस से मायूस हो गए तो मशवरा करने के लिए अकेले हो बैठे, उन के बड़े (भाई) ने कहा, क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे बाप ने तुम से अल्लाह का पुख़्ता अ़हद लिया, और उस से क़ब्ल तुम ने यूसुफ़ (अ) के बारे में तक़्सीर की, पस मैं हरगिज़ न टलूँगा ज़मीन से (यहां से), यहां तक के मेरा बाप मुझे इजाज़त दे या अल्लाह मेरे लिए कोई तदबीर निकाले, और वह सब से बेहतर फ़ैसला करने वाला है। **(80)**
अपने बाप के पास लौट जाओ, पस कहो ऐ हमारे बाप! तुम्हारे बेटे ने चोरी की और हम ने गवाही नहीं दी थी (सिर्फ़ वही कहा था) जो हमें मालूम था, और हम ग़ैब के निगहबान (बाख़बर) न थे। **(81)**
और पूछ लें उस बस्ति से जिस में हम थे, और उस क़ाफ़ले से जिस में हम आए हैं, और बेशक हम सच्चे हैं। **(82)**
उस ने कहा (नहीं) बल्कि तुम्हारे दिल ने बना ली है एक बात, पस सब्र ही अच्छा है, शायद अल्लाह उन सब को मेरे पास ले आए, बेशक वह जानने वाला है, हिक्मत वाला है। **(83)**
और उन से मुँह फेर लिया और कहा हाए अफ़सोस! यूसुफ़ (अ) पर, और उस की आँखें सफ़ेद हो गईं ग़म से, पस वह घुट रहा था (ग़म ज़ब्त कर रहा था)। **(84)**
वह बोले अल्लाह की क़सम! तुम हमेशा यूसुफ़ (अ) को याद करते रहोगे यहां तक कि तुम हो जाओ बीमार या हलाक हो जाओ। **(85)**
उस ने कहा मैं तो अपनी बेक़रारी और अपना ग़म बयान करता हूँ सिर्फ़ अल्लाह के सामने और अल्लाह (की तरफ़) से जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। **(86)**

يٰبَنِيَّ اذْهَبُوْا فَتَحَسَّسُوْا مِنْ يُّوْسُفَ وَاَخِيْهِ وَلَا تَايْـَٔسُوْا

और न मायूस हो	और उस का भाई	यूसुफ़ (अ)	से (का)	पस खोज निकालो	तुम जाओ	ऐ मेरे बेटो

مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ لَا يَايْـَٔسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ

लोग	मगर	अल्लाह की रहमत	से	मायूस नहीं होते	बेशक वह	अल्लाह की रहमत	से

الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٧﴾ فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلَيْهِ قَالُوْا يٰۤاَيُّهَا الْعَزِيْزُ مَسَّنَا

हमें पहुँची	अज़ीज़	ऐ	उन्हों ने कहा	उस पर - सामने	वह दाख़िल हुए	फिर जब	87	काफ़िर (जमा)

وَاَهْلَنَا الضُّرُّ وَجِئْنَا بِبِضَاعَةٍ مُّزْجٰىةٍ فَاَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ

नाप (ग़ल्ला)	हमें	पस पूरी दें	निकम्मी (नाक़िस)	पूंजी के साथ (ले कर)	और हम आए	सख़्ती	और हमारे घर

وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَجْزِى الْمُتَصَدِّقِيْنَ ﴿٨٨﴾ قَالَ

कहा	88	सदक़ा करने वाले	जज़ा देता है	बेशक अल्लाह	हम पर (हमें)	सदक़ा करें

هَلْ عَلِمْتُمْ مَّا فَعَلْتُمْ بِيُوْسُفَ وَاَخِيْهِ اِذْ اَنْتُمْ جٰهِلُوْنَ ﴿٨٩﴾

89	नादान	जब तुम	और उस का भाई	यूसुफ़ (अ) के साथ	क्या तुम ने किया है?	क्या तुम्हें ख़बर है

قَالُوْٓا ءَاِنَّكَ لَاَنْتَ يُوْسُفُ ؕ قَالَ اَنَا يُوْسُفُ وَهٰذَآ اَخِىْ

मेरा भाई	और यह	मैं यूसुफ़ (अ)	उस ने कहा	यूसुफ़ (अ)	तुम ही	क्या तुम ही	वह बोले

قَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا ؕ اِنَّهٗ مَنْ يَّتَّقِ وَيَصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ

तो बेशक अल्लाह	और सब्र करता है	जो डरता है	बेशक वह	हम पर	अल्लाह	अलबत्ता एहसान किया है

لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٩٠﴾ قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ اٰثَرَكَ

तुझे पसन्द किया (फ़ज़ीलत दी)	अल्लाह की क़सम	कहने लगे	90	नेकी करने वाले	अजर	ज़ाए नहीं करता

اللّٰهُ عَلَيْنَا وَاِنْ كُنَّا لَخٰطِـِٕيْنَ ﴿٩١﴾ قَالَ لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ

तुम पर	मलामत नहीं	उस ने कहा	91	ख़ताकार	हम थे	और बेशक	हम पर	अल्लाह

الْيَوْمَ ؕ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ ۫ وَهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿٩٢﴾ اِذْهَبُوْا

तुम जाओ	92	मेहरबानी करने वाले	सब से ज़ियादा मेहरबान	और वह	तुम को	अल्लाह	बख़्शे	आज

بِقَمِيْصِىْ هٰذَا فَاَلْقُوْهُ عَلٰى وَجْهِ اَبِىْ يَاْتِ بَصِيْرًا ۚ

बीना हो कर	आएगा	मेरे बाप	चेहरा	पर	पस उस को डालो	यह	मेरी क़मीस ले कर

ع ١٠ ١٢ ٣ وَاْتُوْنِىْ بِاَهْلِكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٩٣﴾ ع وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيْرُ

क़ाफ़ला	जुदा जुदा (रवाना हुआ)	और जब	93	तमाम (सारे)	अपने घर वालों को	और मेरे पास आओ (ले आओ)

قَالَ اَبُوْهُمْ اِنِّىْ لَاَجِدُ رِيْحَ يُوْسُفَ لَوْلَآ اَنْ

कि	अगर न	यूसुफ़	हवा (ख़ुशबू)	अलबत्ता पाता हूँ	बेशक मैं	उन का बाप	कहा

الرابع تُفَنِّدُوْنِ ﴿٩٤﴾ قَالُوْا تَاللّٰهِ اِنَّكَ لَفِىْ ضَلٰلِكَ الْقَدِيْمِ ﴿٩٥﴾

95	पुराना	अपना वहम	में	बेशक तू	अल्लाह की क़सम	वह कहने लगे	94	मुझे बहक गया जानो

ऐ मेरे बेटो! तुम जाओ पस खोज निकालो यूसुफ़ (अ) का और उस के भाई का, और अल्लाह की रहमत से मायूस न हो, बेशक अल्लाह की रहमत से मायूस नहीं होते मगर काफ़िर लोग। (87)

फिर जब वह उस के सामने दाख़िल हुए उन्हों ने कहा ऐ अज़ीज़! हमें और हमारे घर को पहुँची है सख़्ती, और हम नाक़िस पूंजी ले कर आए हैं, हमें पूरा नाप (ग़ल्ला) दें, और हम पर सदक़ा करें, बेशक अल्लाह सदक़ा करने वालों को जज़ा देता है। (88)

(यूसुफ़ अ) ने कहा क्या तुम्हें ख़बर है? तुम ने यूसुफ़ (अ) और उस के भाई के साथ क्या (सुलूक) किया? जब तुम नादान थे। (89)

वह बोले क्या तुम ही यूसुफ़ (अ) हो? उस ने कहा मैं यूसुफ़ (अ) हूँ और यह मेरा भाई है, अल्लाह ने अलबत्ता हम पर एहसान किया है, बेशक जो डरता है और सब्र करता है तो बेशक अल्लाह ज़ाया नहीं करता नेकी करने वालों का अजर। (90)

कहने लगे अल्लाह की क़सम! अल्लाह ने तुझे हम पर फ़ज़ीलत दी है और हम बेशक ख़ताकार थे। (91)

उस ने कहा आज तुम पर कोई मलामत (इल्ज़ाम) नहीं, अल्लाह तुम्हें बख़्शे, वह सब से ज़ियादा मेहरबान है मेहरबानीं करने वालो में। (92)

तुम मेरी यह क़मीज़ ले कर जाओ पस उस को मेरे बाप के चहरे पर डालो, वह बीना हो जाएंगे, और मेरे पास अपने तमाम घर वालों को ले आओ। (93)

और जब क़ाफ़ला रवाना हुआ उन के बाप ने कहा, बेशक मैं यूसुफ़ (अ) की ख़ुशबू पा रहा हूँ अगर न जानो (न कहो) कि बूढ़ा बहक गया है। (94)

वह कहने लगे अल्लाह की क़सम! बेशक तू अपने पुराने वहम में है। (95)

فَلَمَّآ اَنْ جَآءَ الْبَشِيْرُ اَلْقٰىهُ عَلٰى وَجْهِهٖ فَارْتَدَّ بَصِيْرًا ۚ

देखने वाला	तो लौट कर होगया	उस का मुँह	पर	उस ने वह (कुर्ता) डाला	ख़ुशख़बरी देने वाला	आया	कि	फिर जब

قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ ۚ اِنِّىْٓ اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٩٦﴾

96	तुम नहीं जानते	जो	अल्लाह	(तरफ़) से	बेशक मैं जानता हूँ	तुम से	क्या मैं ने नहीं कहा था	बोला

قَالُوْا يٰٓاَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَآ اِنَّا كُنَّا خٰطِـِٕيْنَ ﴿٩٧﴾

97	ख़ताकार (जमा)	थे	बेशक हम	हमारे गुनाह	हमारे लिए बख़्शिश मांग	ऐ हमारे बाप	वह बोले

قَالَ سَوْفَ اَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّىْ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿٩٨﴾

98	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	वह	बेशक वह	अपना रब	तुम्हारे लिए	मैं बख़्शिश मांगूंगा	जल्द	उस ने कहा

فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰٓى اِلَيْهِ اَبَوَيْهِ وَقَالَ ادْخُلُوْا

तुम दाख़िल हो	और कहा	अपने माँ बाप	उस ने ठिकाना दिया अपने पास	यूसुफ़ (अ) पर (पास)	वह दाख़िल हुए	फिर जब

مِصْرَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ؕ ﴿٩٩﴾ وَرَفَعَ اَبَوَيْهِ عَلَى الْعَرْشِ

तख़्त	पर	अपने माँ बाप	और ऊंचा बिठाया	99	अम्न (दिलजमई) के साथ	अल्लाह ने चाहा	अगर	मिस्र

وَخَرُّوْا لَهٗ سُجَّدًا ۚ وَقَالَ يٰٓاَبَتِ هٰذَا تَاْوِيْلُ رُءْيَاىَ

मेरा ख़्वाब	ताबीर	यह	ऐ मेरे अब्बा	और उस ने कहा	सिज्दे में	उस के लिए (आगे)	और वह गिरगए

مِنْ قَبْلُ ۫ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّىْ حَقًّا ؕ وَقَدْ اَحْسَنَ بِىْٓ اِذْ اَخْرَجَنِىْ

मुझे निकाला	जब	मुझ पर	और बेशक उस ने एहसान किया	सच्चा	मेरा रब	उस को कर दिया	उस से पहले

مِنَ السِّجْنِ وَجَآءَ بِكُمْ مِّنَ الْبَدْوِ مِنْۢ بَعْدِ اَنْ نَّزَغَ

झगड़ा डाल दिया	कि	उस के बाद	गाऊं	से	तुम सब को	और ले आया	क़ैद ख़ाना	से

الشَّيْطٰنُ بَيْنِىْ وَبَيْنَ اِخْوَتِىْ ؕ اِنَّ رَبِّىْ لَطِيْفٌ لِّمَا يَشَآءُ ؕ

जिस के लिए चाहे	उमदा तदबीर करता है	मेरा रब	बेशक	और मेरे भाइयों के दरमियान	मेरे दरमियान	शैतान

اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿١٠٠﴾ رَبِّ قَدْ اٰتَيْتَنِىْ مِنَ الْمُلْكِ

मुल्क	से - एक	तू ने मुझे अ़ता किया	ऐ मेरे रब	100	हिक्मत वाला	जानने वाला	वह	बेशक वह

وَعَلَّمْتَنِىْ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ۚ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۣ

और ज़मीन	आस्मान (जमा)	पैदा करने वाला	बातें (ख़्वाब)	अन्जाम निकालना (ताबीर)	से	और मुझे सिखाया

اَنْتَ وَلِىّٖ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ تَوَفَّنِىْ مُسْلِمًا وَّاَلْحِقْنِىْ

और मुझे मिला	फ़रमांबरदारी की हालत में	मुझे उठा	और आख़िरत	दुनिया में	मेरा कारसाज़	तू

بِالصّٰلِحِيْنَ ﴿١٠١﴾ ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ۚ

तुम्हारी तरफ़	हम वहि करते हैं	ग़ैब की ख़बरें	से	यह	101	सालेह (नेक बन्दों) के साथ

وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ اَجْمَعُوْٓا اَمْرَهُمْ وَهُمْ يَمْكُرُوْنَ ﴿١٠٢﴾

102	चाल चल रहे थे	और वह	अपना काम	उन्हों ने जमा किया (पुख़्ता किया)	जब	उन के पास	और तुम न थे

फिर जब ख़ुशख़बरी देने वाला आया और उस ने कुर्ता उस (याक़ूब अ) के मुँह पर डाला तो वह लौट कर देखने वाला (बीना) हो गया, बोला क्या मैं ने तुम से नहीं कहा था? कि मैं अल्लाह की तरफ़ से जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। (96)
वह बोले ऐ हमारे बाप! हमारे लिए बख़्शीश मांगिए हमारे गुनाहों की, बेशक हम ख़ताकार थे। (97)
उस ने कहा मैं जल्द अपने रब से तुम्हारे गुनाहों की बख़्शीश मांगूंगा, बेशक वह बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (98)
फिर जब वह यूसुफ़ (अ) के पास दाख़िल हुए तो उस ने अपने माँ बाप को अपने पास ठिकाना दिया, और कहा अगर अल्लाह चाहे तो तुम मिस्र में दिलजमई के साथ दाख़िल हो। (99)
और अपने माँ बाप को तख़्त पर ऊंचा बिठाया, और वह उस के आगे गिरगए सिज्दे में और उस ने कहा ऐ मेरे अब्बा! यह है मेरे उस से पहले ख़्वाब की ताबरि, उस को मेरे रब ने सच्चा कर दिया, और बेशक उस ने मुझ पर एहसान किया जब मुझे क़ैद ख़ाने से निकाला, और तुम सब को गाऊं से ले आया उस के बाद कि मेरे और मेरे भाइयों के दरमियान शैतान ने झगड़ा (फ़साद) डाल दिया था, बेशक मेरा रब जिस के लिए चाहे उमदा तदबीर करने वाला है, बेशक वह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (100)
ऐ मेरे रब! तू ने मुझे एक मुल्क अ़ता किया और मुझे सिखाया बातों का अन्जाम (ख़्वाबों की ताबीर) निकालना, ऐ आस्मानों और ज़मीन के पैदा करने वाला! तू मेरा कारसाज़ है दुनिया में और आख़िरत में, मुझे (दुनिया से) फ़रमांबरदारी की हालत में उठाना और मुझे नेक बन्दों के साथ मिलाना। (101)
यह ग़ैब की ख़बरों में से है जो हम तुम्हारी तरफ़ वहि करते हैं और तुम उन के पास न थे जब उन्हों ने अपना काम पुख़्ता किया और वह चाल चल रहे थे। (102)

وَمَآ اَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٣﴾ وَمَا تَسْـَٔلُهُمْ عَلَيْهِ

उस पर	और तुम नहीं मांगते उन से	103	ईमान लाने वाले	तुम चाहो	अगरचे	अक्सर लोग	और नहीं

١١ ع ١١ ٥ مِنْ اَجْرٍ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٤﴾ ع وَكَاَيِّنْ مِّنْ اٰيَةٍ

निशानियां	और कितनी ही	104	सारे जहानों के लिए	नसीहत	मगर	यह नहीं	कोई अजर

فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَمُرُّوْنَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُوْنَ ﴿١٠٥﴾

105	मुँह फेरने वाले	उन से	लेकिन वह	उन पर	वह गुज़रते हैं	और ज़मीन	आस्मानों में

وَمَا يُؤْمِنُ اَكْثَرُهُمْ بِاللّٰهِ اِلَّا وَهُمْ مُّشْرِكُوْنَ ﴿١٠٦﴾ اَفَاَمِنُوْٓا

पस किया वह बेख़ौफ़ हो गए	106	मुश्रिक (जमा)	और वह	मगर	अल्लाह पर	उन में अक्सर	और ईमान नहीं लाते

اَنْ تَاْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ مِّنْ عَذَابِ اللّٰهِ اَوْ تَاْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً

अचानक	घड़ी (क़ियामत)	उन पर आजाए	या	अल्लाह का अ़ज़ाब	से	छा जाने वाली (आफ़त)	कि उन पर आए

وقف النبي ﷺ وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٠٧﴾ قُلْ هٰذِهٖ سَبِيْلِيْٓ اَدْعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ ۣ قف

अल्लाह की तरफ़	मैं बुलाता हूँ	मेरा रास्ता	यह	आप कह दें	107	उन्हें ख़बर न हो	और वह

عَلٰى بَصِيْرَةٍ اَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِيْ ؕ وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ وَمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٨﴾

108	मुश्रिक (जमा)	से	और मैं नहीं	और अल्लाह पाक है	मेरी पैरवी की	और जो-जिस	मैं	दानाई पर (समझ बूझ के मुताबिक़)

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ مِّنْ اَهْلِ الْقُرٰى ؕ

बस्तियों वाले	से	उन की तरफ़	हम वहि भेजते थे	मर्द	मगर-सिर्फ़	तुम से पहले	और हम ने नहीं भेजा

اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ

वह लोग जो	अन्जाम	हुआ	कैसा - क्या	पस वह देखते	ज़मीन (मुल्क) में	क्या पस उन्हों ने सैर नहीं की

مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ اتَّقَوْا ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٠٩﴾

109	पस क्या तुम समझते नहीं	जिन्हों ने परहेज़ किया	उन के लिए जो	बेहतर	और अलबत्ता आख़िरत का घर	उन से पहले

حَتّٰٓى اِذَا اسْتَيْـَٔسَ الرُّسُلُ وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ قَدْ كُذِبُوْا جَآءَهُمْ

उन के पास आई	उन से झूट कहा गया	कि वह	और उन्हों ने गुमान किया	रसूल (जमा)	मायूस होने लगे	जब	यहां तक

نَصْرُنَا ۙ فَنُجِّىَ مَنْ نَّشَآءُ ؕ وَلَا يُرَدُّ بَاْسُنَا عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿١١٠﴾

110	मुज्रिम (जमा)	क़ौम	से	हमारा अ़ज़ाब	और नहीं फेरा जाता	हम ने जिन्हें चाहा	पस बचा दिए गए	हमारी मदद

لَقَدْ كَانَ فِىْ قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِّاُولِى الْاَلْبَابِ ؕ مَا كَانَ

नहीं है	अक़्लमन्दों के लिए	इब्रत (नसीहत)	उन के क़िस्से	में	है	अलबत्ता

حَدِيْثًا يُّفْتَرٰى وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِىْ بَيْنَ يَدَيْهِ

उस से (अपने से) पहली	वह जो	तसदीक़	और लेकिन (बल्कि)	बनाई हुई	बात

١٢ ع ٧ ٦ وَتَفْصِيْلَ كُلِّ شَىْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿١١١﴾ ع

111	जो ईमान लाते हैं	लोगों के लिए	और रहमत	और हिदायत	हर बात	और तफ़सील (बयान)

अगरचे तुम (कितना ही) चाहो और अक्सर लोग ईमान लाने वाले नहीं। (103)
और तुम उन से उस पर कोई अजर नहीं मांगते, यह (और कुछ) नहीं, सारे जहानों के लिए नसीहत है। (104)
और आस्मानों में और ज़मीन में कितनी ही निशानियां हैं वह उन पर गुज़रते हैं, लेकिन वह उन से मुँह फेरने वाले हैं। (105)
और उन में से अक्सर अल्लाह पर ईमान नहीं लाते मगर वह मुश्रिक हैं। (106)
पस किया वह (उस से) बेख़ौफ़ हो गए कि उन पर अल्लाह के अ़ज़ाब की आफ़त आजाए, या उन पर आजाए अचानक क़ियामत, और उन्हें ख़बर (भी) न हो। (107)
आप (स) कह दें यह मेरा रास्ता है, मैं अल्लाह की तरफ़ बुलाता हूँ, समझ बूझ के मुताबिक़, मैं (भी) और वह (भी) जिस ने मेरी पैरवी की, और अल्लाह पाक है, और मैं मुश्रिकों में से नहीं। (108)
और हम ने तुम से पहले बस्तियों में रहने वाले लोगों में से सिर्फ़ मर्द (नबी) भेजे जिन की तरफ़ हम वही भजते थे, पस क्या उन्हों ने सैर नहीं की मुल्क में? कि वह देखते उन से पहले लोगों का अन्जाम क्या हुआ? और अलबत्ता आख़िरत का घर उन लोगों के लिए बेहतर है जिन्हों ने परहेज़ किया, पस क्या तुम नहीं समझते? (109)
यहां तक कि जब (ज़ाहिरी असबाब से) रसूल मायूस होने लगे और उन्हों ने गुमान किया कि उन से झूट कहा गया था, उन के पास हमारी मदद आगई, पस जिन्हें हम ने चाहा वह बचा दिए गए और हमारा अ़ज़ाब नहीं फेरा जाता मुज्रिमों की क़ौम से। (110)
अलबत्ता उन के क़िस्सों में अक़्लमन्दों के लिए इब्रत है यह बनाई हुई बात नहीं, बल्कि तसदीक़ है अपने से पहलों की, और बयान है हर बात का, और हिदायत ओ रहमत है उन लोगों के लिए जो ईमान लाते हैं। (111)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, रहम करने वाला है

अलिफ़-लाम-मीम-रा - यह किताब (क़ुरआन) की आयतें हैं, और जो तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम्हारी तरफ़ उतारा गया हक़ है, मगर अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। (1) अल्लाह जिस ने आस्मानों को बुलन्द किया किसी सुतून (सहारे) के बग़ैर तुम देखते हो उसे, फिर अ़र्श पर क़रार पकड़ा, और सूरज और चाँद को मुसख़्ख़र किया (काम पर लगाया) हर एक चलता है एक मुद्दत मुक़र्ररा तक, अल्लाह काम की तदबीर करता है, वह निशानियां बयान करता है ताकि तुम अपने रब से मिलने का यक़ीन कर लो। (2) और वही है जिस ने ज़मीन को फैलाया, और उस में पहाड़ बनाए और नहरें (चलाईं) और हर क़िस्म के फल (पैदा किए) और उस में दो, दो क़िस्म के (तल्ख़ ओ शिरीन) फल बनाए, और वह दिन को रात से ढांपता है, बेशक उस में निशानियां हैं ग़ौर ओ फ़िक्र करने वाले लोगों के लिए। (3) और ज़मीन में पास पास क़त्आ़त हैं, और बाग़ात हैं अंगूरों के, और खेतियां और खजूर एक जड़ से दो शाख़ों वाली और बग़ैर दो शाख़ों की, एक ही पानी से (हालांकि) सैराब की जाती हैं, और हम बेहतर बना देते हैं उन में से एक को दूसरे पर ज़ाइक़े में, इस में निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो अ़क़्ल से काम लेते हैं। (4) और अगर तुम तअ़ज्जुब करो तो उन का यह कहना अजब हैः जब हम मिट्टी हो गए क्या हम (अज़ सरे नौ) नई ज़िन्दगी पाएंगे? वही लोग हैं जो अपने रब के मुन्किर हुए, और वही हैं जिन की गर्दनों में तौक़ होंगे, और वही दोज़ख़ वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (5)

آيَاتُهَا ٤٣ ❀ سُوْرَةُ الرَّعْدِ (١٣) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٦

रुकुआ़त 6 | (13) सूरतुर रअ़्द | गरज | आयात 43

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

الٓمّٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ ؕ وَالَّذِیْٓ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ

हक़	तुम्हारे रब की तरफ़ से	तुम्हारी तरफ़	उतारा गया	और वह जो कि	किताब	आयतें	यह	अलिफ़ लाम मीम रा

وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ١ اَللّٰهُ الَّذِیْ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ

आस्मान (जमा)	बुलन्द किया	वह जिस ने	अल्लाह	1	ईमान नहीं लाते	अक्सर लोग	और लेकिन (मगर)

بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ

और चाँद	सूरज	और काम पर लगाया	अ़र्श पर	क़रार पकड़ा	फिर	तुम उसे देखते हो	किसी सुतून के बग़ैर

كُلٌّ يَّجْرِیْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ

ताकि तुम	निशानियां	वह बयान करता है	काम	तदबीर करता है	मुक़र्ररा	एक मुद्दत	चलता है	हर एक

بِلِقَآءِ رَبِّكُمْ تُوْقِنُوْنَ ٢ وَهُوَ الَّذِیْ مَدَّ الْاَرْضَ وَجَعَلَ فِيْهَا

उस में	और बनाया	ज़मीन	फैलाया	वह - जिस	और वही	2	तुम यक़ीन कर लो	अपना रब	मिलने का

رَوَاسِیَ وَاَنْهٰرًا ؕ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ جَعَلَ فِيْهَا زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ

दो, दो क़िस्म	जोड़े	उस में	बनाया	हर एक फल (जमा)	और से	और नहरें	पहाड़ (जमा)

يُغْشِی الَّيْلَ النَّهَارَ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ٣

3	जो ग़ौर ओ फ़िक्र करते हैं	लोगों के लिए	निशानियां	उस	में	बेशक	दिन	रात	वह ढांपता है

وَفِی الْاَرْضِ قِطَعٌ مُّتَجٰوِرٰتٌ وَّجَنّٰتٌ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّزَرْعٌ وَّنَخِيْلٌ

और खजूर	और खेतियां	अंगूर (जमा)	से - के	और बाग़ात	पास पास	क़ित्आ़त	ज़मीन	और में

صِنْوَانٌ وَّغَيْرُ صِنْوَانٍ يُّسْقٰى بِمَآءٍ وَّاحِدٍ ۟ وَنُفَضِّلُ بَعْضَهَا

उन का एक	और हम फ़ज़ीलत देते हैं	एक	पानी से	सैराब किया जाता है	दो शाख़ों वाली	और बग़ैर	एक जड़ से दो शाख़ों वाली

عَلٰى بَعْضٍ فِی الْاُكُلِ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ٤

4	अ़क़्ल से काम लेते हैं	लोगों के लिए	निशानियां	उस	में	बेशक	ज़ाइक़ा	में	दूसरा	पर

وَاِنْ تَعْجَبْ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا ءَاِنَّا لَفِیْ خَلْقٍ

ज़िन्दगी पाएंगे	क्या हम	मिट्टी	हो गए हम	क्या जब	उन का कहना	तो अ़जब	तुम तअ़ज्जुब करो	और अगर

جَدِيْدٍ ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ الْاَغْلٰلُ فِیْٓ

में	तौक़ (जमा)	और वही हैं	अपने रब के	मुन्किर हुए	जो लोग	वही	नई

اَعْنَاقِهِمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ٥

5	हमेशा रहेंगे	उस में	वह	दोज़ख़ वाले	और वही हैं	उन की गर्दनों

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ وَقَدْ خَلَتْ مِنْ

से	और (हालांकि) गुज़र चुकी	भलाई (रहमत) से पहले	बुराई (अ़ज़ाब)	और वह तुम से जल्दी मांगते हैं

قَبْلِهِمُ الْمَثُلٰتُ ؕ وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلٰى

पर	लोगों के लिए	अलबत्ता मग़फ़िरत वाला	तुम्हारा रब	और बेशक	सज़ाएं	उन से क़ब्ल

ظُلْمِهِمْ ۚ وَاِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٦﴾ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	और कहते हैं	6	अलबत्ता सख़्त अ़ज़ाब देने वाला	तुम्हारा रब	और बेशक	उन का ज़ुल्म

لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ اِنَّمَآ اَنْتَ مُنْذِرٌ

डराने वाले	तुम	उस के सिवा नहीं	उस का रब	से	कोई निशानी	उस पर	क्यों न उतरी

ع ١ ٧ وَّلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ﴿٧﴾ اَللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ اُنْثٰى وَمَا تَغِيْضُ

सुकड़ता है	और जो	हर मादा	जो पेट में रखती है	जानता है	अल्लाह	7	हादी	और हर क़ौम के लिए

الْاَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ ؕ وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهٗ بِمِقْدَارٍ ﴿٨﴾ عٰلِمُ الْغَيْبِ

जानने वाला हर ग़ैब	8	एक अन्दाज़े से	उस के नज़्दीक	चीज़	और हर	बढ़ता है	और जो	रहम (जमा)

وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيْرُ الْمُتَعَالِ ﴿٩﴾ سَوَآءٌ مِّنْكُمْ مَّنْ اَسَرَّ الْقَوْلَ

बात	आहिस्ता कहे	जो	तुम में	बराबर	9	बुलन्द मरतबा	सब से बड़ा	और ज़ाहिर

وَمَنْ جَهَرَ بِهٖ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍۢ بِالَّيْلِ وَسَارِبٌۢ بِالنَّهَارِ ﴿١٠﴾

10	दिन में	और चलने वाला	रात में	छुप रहा है	वह	और जो	पुकार कर - उस को	और जो

لَهٗ مُعَقِّبٰتٌ مِّنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ يَحْفَظُوْنَهٗ

वह उसकी हिफ़ाज़त करते हैं	और उस के पीछे	उस (इन्सान) के आगे से	पहरेदार	उस के

مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا

जो	वह बदल लें	यहां तक कि	किसी क़ौम के पास (अच्छी हालत)	जो	नहीं बदलता	अल्लाह	बेशक	अल्लाह का हुक्म	से

بِاَنْفُسِهِمْ ؕ وَاِذَآ اَرَادَ اللّٰهُ بِقَوْمٍ سُوْٓءًا فَلَا مَرَدَّ لَهٗ ۚ وَمَا لَهُمْ

उन के लिए	और नहीं	उस के लिए	तो नहीं फिरना	बुराई	किसी क़ौम से	इरादा करता है अल्लाह	और जब	अपने दिलों में (अपनी हालत)

مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّالٍ ﴿١١﴾ هُوَ الَّذِيْ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا

उम्मीद दिलाने को	डराने को	बिजली	तुम्हें दिखाता है	वह जो कि	वह	11	कोई मददगार	उस के सिवा

وَّيُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ﴿١٢﴾ وَيُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهٖ وَالْمَلٰٓئِكَةُ

और फ़रिश्ते	उस की तारीफ़ के साथ	गरज	और पाकीज़गी बयान करती है	12	बोझल	बादल	और उठाता है

مِنْ خِيْفَتِهٖ ۚ وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَيُصِيْبُ بِهَا مَنْ

जिस	उसे	फिर गिराता है	गरजने वाली बिजलियां	और वह भेजता है	उस के डर से	से

يَّشَآءُ وَهُمْ يُجَادِلُوْنَ فِى اللّٰهِ ۚ وَهُوَ شَدِيْدُ الْمِحَالِ ﴿١٣﴾

13	पकड़	सख़्त	और वह	अल्लाह (के बारे) में	झगड़ते हैं	और वह	वह चाहता है

और वह तुम से रहमत से पहले जल्द अ़ज़ाब मांगते हैं, हालांकि गुज़र चुकी हैं उन से क़ब्ल (इब्रत नाक) सज़ाएं, और बेशक तुम्हारा रब उनके ज़ुल्म के बावजूद लोगों के लिए मग़फ़िरत वाला है, और बेशक तुम्हारा रब सख़्त अ़ज़ाब देने वाला है। (6)

और काफ़िर कहते हैं उस के रब की तरफ़ से उस पर कोई निशानी क्यों न उतरी? उस के सिवा नहीं के तुम डराने वाले हो, और हर क़ौम के लिए हादी हुआ है। (7)

अल्लाह जानता है जो हर मादा पेट में रखती है और जो रहम में सुकड़ता और बढ़ता है, और उस के नज़्दीक हर चीज़ एक अन्दाज़े से है। (8)

जानने वाला है हर ग़ैब और ज़ाहिर का, सब से बड़ा, बुलन्द मरतबा है। (9)

(उस के लिए) बराबर है तुम में से जो आहिस्ता बात कहे और जो उस को पुकार कर कहे और जो रात में छुप रहा है और जो दिन में चलने (फिरने) वाला है। (10)

उस के पहरेदार हैं इन्सान के आगे से और उस के पीछे से, वह अल्लाह के हुक्म से उस की हिफ़ाज़त करते हैं, बेशक अल्लाह किसी क़ौम की अच्छी हालत नहीं बदलता यहां तक कि वह ख़ुद अपनी हालत बदल लें, और जब अल्लाह किसी क़ौम से बुराई का इरादा करता है तो उस के लिए फिरना नहीं (वह टल नहीं सकती) और उन के लिए उस के सिवा कोई मददगार नहीं। (11)

वही है जो तुम्हें बिजली दिखाता है डराने को और उम्मीद दिलाने को और उठाता है बोझल बादल। (12)

और गरज उस की तारीफ़ के साथ पाकी बयान करती है और फ़रिश्ते उस के डर से (उस की तस्बीह करते हैं) और वह गरजने वाली बिजलियां भेजता है, फिर उन्हें जिस पर चाहता है गिराता है और वह (काफ़िर) अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं और वह सख़्त पकड़ वाला है। (13)

لَهٗ دَعْوَةُ الْحَقِّ ؕ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَجِيْبُوْنَ

वह जवाब नहीं देते	उस के सिवा	वह पुकारते हैं	और जिन को	हक़	पुकारना	उस को

لَهُمْ بِشَيْءٍ اِلَّا كَبَاسِطِ كَفَّيْهِ اِلَى الْمَآءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ

वह	और नहीं	उस के मुँह तक	ताकि पहुँच जाए	पानी की तरफ़	अपनी हथेलियां	जैसे फैला दे	मगर	कुछ भी	उन को

بِبَالِغِهٖ ؕ وَمَا دُعَآءُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ﴿١٤﴾ وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ

और अल्लाह ही को सिज्दा करता है	14	गुमराही	में	सिवाए	काफ़िर (जमा)	पुकार	और नहीं	उस तक पहुँचने वाला

مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّظِلٰلُهُمْ بِالْغُدُوِّ

सुब्ह	और उन के साए	या नाखुशी से	खुशी से	और ज़मीन	आस्मानों	में	जो

وَالْاٰصَالِ ﴿١٥﴾ السجدة قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قُلِ اللّٰهُ ؕ السّجدة ٢

अल्लाह	कह दें	और ज़मीन	आस्मानों का रब	कौन	पूछें	15	और शाम

قُلْ اَفَاتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ لَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ نَفْعًا

कुछ नफ़ा	अपनी जानों के लिए	वह बस नहीं रखते	हिमायती	उस के सिवा	तो क्या तुम बनाते हो	कह दें

وَّلَا ضَرًّا ؕ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۙ اَمْ هَلْ

क्या	या	और बीना (देखने वाला)	नाबीना (अन्धा)	बराबर होता है	क्या	कह दें	और न नुक़्सान

تَسْتَوِي الظُّلُمٰتُ وَالنُّوْرُ ۚ اَمْ جَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ خَلَقُوْا

उन्हों ने पैदा किया है	शरीक	अल्लाह के लिए	वह बनाते हैं	क्या	और उजाला	अन्धेरे (जमा)	बराबर हो जाएगा

كَخَلْقِهٖ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ ؕ قُلِ اللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ

हर शै	पैदा करने वाला	अल्लाह	कह दें	उन पर	पैदाइश	तो मुशतबह होगई	उस के पैदा करने की तरह

وَّهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿١٦﴾ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَالَتْ

सो बह निकले	पानी	आस्मानों से	उस ने उतारा	16	ज़बरदस्त (ग़ालिब)	यकता	और वह

اَوْدِيَةٌۢ بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا رَّابِيًا ؕ وَمِمَّا

और उस से जो	फूला हुआ	झाग	नाला	फिर उठा लाया	अपने अपने अन्दाज़े से	नदी नाले

يُوْقِدُوْنَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ ابْتِغَآءَ حِلْيَةٍ اَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ

झाग	असबाब	या	ज़ेवर	हासिल करने (बनाने) को	आग में	उस पर	तपाए हैं

مِّثْلُهٗ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ ۬ؕ فَاَمَّا

सो	और बातिल	हक़	अल्लाह	बयान करता है	उसी तरह	उसी जैसा

الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَآءً ۚ وَاَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ

लोग	जो नफ़ा पहुँचाता है	और लेकिन	सूख कर	दूर हो जाता है	झाग

فَيَمْكُثُ فِي الْاَرْضِ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ ﴿١٧﴾ؕ

17	मिसालें	अल्लाह	बयान करता है	इसी तरह	ज़मीन में	तो ठहरा रहता है

उस को पुकारना हक़ है, और उस के सिवा वह जिन को पुकारते हैं वह उन्हें कुछ भी जवाब नहीं देते मगर जैसे (कोई) अपनी दोनों हथेलियां पानी की तरफ़ फैलादे ताकि (पानी) उस के मुँह तक पहुँच जाए, और वह उस तक हरगिज़ पहुँचने वाला नहीं, और काफ़िरों की पुकार गुमराही के सिवा कुछ नहीं। (14)
और अल्लाह ही को सिज्दा करता है जो आस्मानों और ज़मीन में है, खुशी से या न खुशी से, और सुब्ह ओ शाम उन के साए (भी)। (15)
आप (स) पूछें आस्मानों और ज़मीन का रब कौन है? कह दें, अल्लाह है, कह दें तो क्या तुम उस के सिवा बनाते हो हिमायती जो अपनी जानों के लिए (भी) बस नहीं रखते कुछ नफ़ा का और न नुक़्सान का, कह दें क्या बराबर होता है अन्धा और देखने वाला? या क्या उजाला और अन्धेरे बराबर हो जाएंगे? क्या वह अल्लाह के लिए जो शरीक बनालेते हैं उन्हों ने (मख़लूक़) पैदा की है उस के पैदा करने की तरह? सो पैदाइश उन पर मुशतबह हो गई, कह दें अल्लाह हर शै का पैदा करने वाला है और वह यकता ग़ालिब है। (16)
उस ने आस्मानों से पानी उतारा, सो नदी नाले अपने अपने अन्दाज़े से वह निकले, फिर उठा लाया (ऊपर ले आया) नाला फूला हुआ झाग, और जो आग में तपाते हैं ज़ेवर बनाने को या और असबाब बनाने को, (उस में भी) उस जैसा झाग (मैल) होता है, उसी तरह अल्लाह हक़ और बातिल को बयान करता है, सो झाग दूर हो जाता है (ज़ाया हो जाता है) सूख कर, लेकिन जो लोगों को नफ़ा पहुँचाता है वह ज़मीन में ठहरा रहता है (बाक़ी रहता है) इसी तरह अल्लाह मिसालें बयान करता है। (17)

وقف النبي ﷺ لِلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنٰى ؕ وَالَّذِيْنَ لَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهٗ لَوْ اَنَّ

यह कि	अगर	उस का (हुक्म)	न माना	और जिन लोगों ने	भलाई	अपने रब (का हुक्म)	उन्हों ने मान लिया	उन के लिए जिन्हों ने

لَهُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ

उन के लिए	वही हैं	उस को	कि फ़िदये में देदें	उस के साथ	और उस जैसा	सब	जो कुछ ज़मीन में	उन के लिए (उन का)

النصف ع ١٠/٢ ٨ سُوْٓءُ الْحِسَابِ ۙ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿۱۸﴾ اَفَمَنْ يَّعْلَمُ

जानता है	पस क्या जो	18	बिछाना (जगह)	और बुरा	जहन्नम	और उन का ठिकाना	हिसाब	बुरा

اَنَّمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ اَعْمٰى ؕ اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ

समझते हैं	इस के सिवा नहीं	अन्धा	वह	उस जैसा	हक़	तुम्हारा रब	से	तुम्हारी तरफ़	उतारा गया	कि जो

اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿۱۹﴾ الَّذِيْنَ يُوْفُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَلَا يَنْقُضُوْنَ الْمِيْثَاقَ ﴿۲۰﴾

20	पुख़्ता क़ौल ओ इक़रार	और वह नहीं तोड़ते	अल्लाह का अ़हद	पूरा करते हैं	और वह जो कि	19	अ़क़्ल वाले

وَالَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ

अपना रब	और वह डरते हैं	जोड़ा जाए	कि	उस का	अल्लाह ने हुक्म दिया	जो	जोड़े रखते हैं	और वह जो कि

وَيَخَافُوْنَ سُوْٓءَ الْحِسَابِ ﴿۲۱﴾ وَالَّذِيْنَ صَبَرُوا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ

अपना रब	ख़ुशी	हासिल करने के लिए	उन्हों ने सब्र किया	और वह लोग जो	21	हिसाब	बुरा	और ख़ौफ़ खाते हैं

وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً وَّيَدْرَءُوْنَ

और टाल देते हैं	और ज़ाहिर	पोशीदा	हम ने उन्हें दिया	उस से जो	और ख़र्च किया	नमाज़	और उन्हों ने क़ाइम की

بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿۲۲﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ

हमेशगी	बाग़ात	22	आख़िरत का घर	उन के लिए	वही हैं	बुराई	नेकी से

يَّدْخُلُوْنَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَالْمَلٰٓئِكَةُ

और फ़रिश्ते	और उन की औलाद	और उन की बीवियां	उन के बाप दादा	से (में)	नेक हुए	और जो	वह उस में दाख़िल होंगे

يَدْخُلُوْنَ عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ ﴿۲۳﴾ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ

पस ख़ूब	तुम ने सब्र किया	इस लिए कि	तुम पर	सलामती	23	हर दरवाज़ा	से	उन पर	दाख़िल होंगे

عُقْبَى الدَّارِ ﴿۲۴﴾ وَالَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ

उस को पुख़्ता करना	उस के बाद	अल्लाह का अ़हद	तोड़ते हैं	और वह लोग जो	24	आख़िरत का घर

وَيَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ ۙ اُولٰٓئِكَ

यही हैं	ज़मीन में	और वह फ़साद करते हैं	कि वह जोड़ा जाए	उस का	अल्लाह ने हुक्म दिया	जो	और वह काटते हैं

لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ ﴿۲۵﴾ اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ؕ

और तंग करता है	जिस के लिए वह चाहता है	रिज़्क़	कुशादा करता है	अल्लाह	25	बुरा घर	और उनके लिए	लानत	उन के लिए

ع ٨/٣ ٩ وَفَرِحُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا مَتَاعٌ ﴿۲۶﴾

26	मताअ़ हक़ीर	मगर (सिर्फ़)	आख़िरत (के मुक़ाबले) में	दुनिया की ज़िन्दगी	और नहीं	दुनिया	ज़िन्दगी से	और वह ख़ुश हैं

जिन लोगों ने अपने रब का हुक्म मान लिया उन के लिए भलाई है, और जिन्हों ने उस का हुक्म न माना अगर जो कुछ ज़मीन में है सब उन का हो और उस के साथ उस जैसा (और भी हो) कि वह उस को फ़िदये में देदें (फिर भी बचाओ न होगा), उन्हीं लोगों के लिए हिसाब बुरा है, और उन का ठिकाना जहन्नम है और (वह) बुरी जगह है। (18)
क्या जो शख़्स जानता है कि जो उतारा गया तुम पर तुम्हारे रब की तरफ़ से, वह हक़ है उस जैसा (हो सकता है) जो अन्धा हो, इस के सिवा नहीं कि अ़क़्ल वाले ही समझते हैं। (19)
वह जो कि अल्लाह का अ़हद पूरा करते हैं, और पुख़्ता क़ौल ओ इक़रार नहीं तोड़ते। (20)
और वह लोग जो जोड़े रखते हैं जिस के लिए अल्लाह ने हुक्म दिया कि जोड़ा जाए, और वह अपने रब से डरते हैं, और बुरे हिसाब का ख़ौफ़ खाते हैं। (21)
और जिन लोगों ने अपने रब की ख़ुशी हासिल करने के लिए सब्र किया, और उन्हों ने नमाज़ क़ाइम की, और जो हम ने उन्हें दिया उस से ख़र्च किया पोशीदा और ज़ाहिर, और वह नेकी से बुराई को टाल देते हैं, वही हैं जिन के लिए आख़िरत का घर है। (22)
हमेशगी के बाग़ात (हैं) उन में वह दाख़िल होंगे, और वह जो उन के बाप दादा, और उन की बीवियों, और औलाद में से नेक हुए और उन पर हर दरवाज़े से फ़रिश्ते दाख़िल होंगे, (23)
(यह कहते हुए कि) तुम पर सलामती हो इस लिए कि तुम ने सब्र किया पस ख़ूब है आख़िरत का घर। (24)
और जो लोग अल्लाह का अ़हद उस को पुख़्ता करने के बाद तोड़ते हैं, और वह काटते हैं जिस के लिए अल्लाह ने हुक्म दिया जो उसे जोड़ा जाए, और वह ज़मीन (मुल्क) में फ़साद करते हैं, यही लोग हैं जिन के लिए लानत है और उन के लिए बुरा घर है। (25)
अल्लाह जिस के लिए चाहता है रिज़्क़ कुशादा करता है, और (जिस के लिए चाहता है) तंग करता है, और वह दुनिया की ज़िन्दगी से ख़ुश हैं, और दुनिया की ज़िन्दगी आख़िरत के मुक़ाबले में मताअ़ हक़ीर है। (26)

और काफ़िर कहते हैं उस पर उस के रब (की तरफ़) से कोई निशानी क्यों न उतारी गई? आप (स) कह दें बेशक अल्लाह गुमराह करता है जिस को चाहता है, और अपनी तरफ़ उस को राह दिखाता है जो (उस की तरफ़) रुजूअ़ करे। **(27)** जो लोग ईमान लाए और इत्मीनान पाते हैं जिन के दिल अल्लाह की याद से, याद रखो! अल्लाह की याद (ही) से दिल इत्मीनान पाते हैं। **(28)** जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अ़मल किए नेक, उन के लिए ख़ुशहाली है और अच्छा ठिकाना। **(29)** इसी तरह हम ने तुम्हें उस उम्मत में भेजा है, गुज़र चुकी है इस से पहले उम्मतें ताकि जो हम ने तुम्हारी तरफ़ वहि किया है तुम उन को पढ़ कर (सुनाओ) और वह (अल्लाह) रहमान के मुन्किर होते हैं आप (स) कहदें वह मेरा रब है उस के सिवा कोई माबूद नहीं, उस पर मैं ने भरोसा किया और उसी की तरफ़ मेरा रुजूअ़ है (रुजूअ़ करता हूँ)। **(30)** और अगर ऐसा कुरआन होता कि उस से पहाड़ चल पड़ते, या उस से ज़मीन फट जाती, या उस से मुर्दे बात करने लगते (फिर भी यह ईमान न लाते) बल्कि अल्लाह ही के लिए है तमाम कामों (का इख़्तियार), तो क्या मोमिनों को (उस से) इत्मीनान नहीं हुआ कि अगर अल्लाह चाहता तो सब लोगों को हिदायत दे देता और काफ़िरों को उन के आमाल के बदले हमेशा सख़्त मुसीबत पहुंचती रहेगी, या उतरेगी क़रीब उन के घर के, यहां तक कि अल्लाह का वादा आजाए और बेशक अल्लाह वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता। **(31)** और अलबत्ता तुम से पहले रसूलों का मज़ाक़ उड़ाया गया, तो मैं ने काफ़िरों को ढील दी, फिर मैं ने उन की पकड़ की सो मेरा बदला (अ़ज़ाब) कैसा था? **(32)** पस क्या जो हर शख़्स के आमाल का निगरान है (वह बुतों की तरह हो सकता है?) और उन्हों ने बना लिए अल्लाह के शरीक, आप (स) कहदें उन के नाम तो लो या तुम (अल्लाह) को वह बतलाते हो जो पूरी ज़मीन में उस के इल्म में नहीं, या महज़ ज़ाहिरी (ऊपरी) बात करते हो, बल्कि जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन के लिए उन के फ़रेब ख़ुशनुमा बना दिए गए और वह राहे (हिदायत) से रोक दिए गए और जिस को अल्लाह गुमराह करे उस के लिए कोई हिदायत देने वाला नहीं। **(33)**

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ

बेशक अल्लाह	आप कह दें	उस का रब	से	कोई निशानी	उस पर	उतारी गई	क्यों न	वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	और कहते हैं

يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ اَنَابَ ۖۚ ﴿٢٧﴾ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَطْمَئِنُّ

और इत्मीनान पाते हैं	ईमान लाए	जो लोग	27	रुजूअ़ करे	जो	अपनी तरफ़	और राह दिखाता है	जिस को चाहता है	गुमराह करता है

قُلُوْبُهُمْ بِذِكْرِ اللّٰهِ ؕ اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ ؕ ﴿٢٨﴾ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

ईमान लाए	जो लोग	28	दिल (जमा)	इत्मीनान पाते हैं	अल्लाह के ज़िक्र से	याद रखो	अल्लाह के ज़िक्र से	जिन के दिल

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ طُوْبٰى لَهُمْ وَحُسْنُ مَاٰبٍ ﴿٢٩﴾ كَذٰلِكَ اَرْسَلْنٰكَ فِيْٓ

में	हम ने तुम्हें भेजा	इसी तरह	29	ठिकाना	और अच्छा	उन के लिए	ख़ुशहाली	नेक (जमा)	और उन्हों ने अ़मल किए

اُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهَآ اُمَمٌ لِّتَتْلُوَا۟ عَلَيْهِمُ الَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ

तुम्हारी तरफ़	हम ने वहि किया	वह जो कि	उन पर (उन को)	ताकि तुम पढ़ो	उम्मतें	उस से पहले	गुज़र चुकी हैं	उस उम्मत

وَهُمْ يَكْفُرُوْنَ بِالرَّحْمٰنِ ؕ قُلْ هُوَ رَبِّيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ

और उस की तरफ़	मैं ने भरोसा किया	उस पर	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	मेरा रब	वह	कह दें	रहमान के	मुन्किर होते हैं	और वह

مَتَابِ ﴿٣٠﴾ وَلَوْ اَنَّ قُرْاٰنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ اَوْ قُطِّعَتْ بِهِ الْاَرْضُ

ज़मीन	उस से	फट जाती	या	पहाड़	उस से	चलाए जाते	ऐसा कुरआन	यह के (होता)	और अगर	30	मेरा रुजूअ़

اَوْ كُلِّمَ بِهِ الْمَوْتٰى ؕ بَلْ لِّلّٰهِ الْاَمْرُ جَمِيْعًا ؕ اَفَلَمْ يَايْـَٔسِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ

कि	वह लोग जो ईमान लाए (मोमिन)	तो क्या इत्मीनान नहीं हुआ	तमाम	काम	अल्लाह के लिए	बल्कि	मुर्दे	उस से	या बात करने लगते

لَّوْ يَشَآءُ اللّٰهُ لَهَدَى النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا تُصِيْبُهُمْ

उन्हें पहुँचेगी	वह लोग जो काफ़िर हुए (काफ़िर)	और हमेशा	सब	लोग	तो हिदायत दे देता	अगर अल्लाह चाहता

بِمَا صَنَعُوْا قَارِعَةٌ اَوْ تَحُلُّ قَرِيْبًا مِّنْ دَارِهِمْ حَتّٰى يَاْتِيَ وَعْدُ اللّٰهِ ؕ

अल्लाह का वादा	आजाए	यहां तक	उन के घर	से (के)	क़रीब	या उतरेगी	सख़्त मुसीबत	उस के बदले जो उन्हों ने किया (आमाल)

اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ﴿٣١﴾ وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَاَمْلَيْتُ ع ٥ ١٠

तो मैं ने ढील दी	तुम से पहले	रसूलों का	मज़ाक़ उड़ाया गया	और अलबत्ता	31	वादा	ख़िलाफ़ नहीं करता	बेशक अल्लाह

لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۟ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ﴿٣٢﴾ اَفَمَنْ هُوَ قَآئِمٌ

निगरान	वह	पस क्या जो	32	मेरा बदला	था	सो कैसा	मैं ने उन की पकड़ की	फिर	जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

عَلٰى كُلِّ نَفْسٍۢ بِمَا كَسَبَتْ ۚ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ ؕ قُلْ سَمُّوْهُمْ ؕ اَمْ تُنَبِّئُوْنَهٗ

तुम उसे बतलाते हो	या	उन के नाम लो	आप कहदें	शरीक (जमा)	अल्लाह के	और उन्हों ने बना लिए	जो उस ने कमाया (आमाल)	हर शख़्स	पर

بِمَا لَا يَعْلَمُ فِى الْاَرْضِ اَمْ بِظَاهِرٍ مِّنَ الْقَوْلِ ؕ بَلْ زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا

उन लोगों के लिए जिन्हों ने कुफ़्र किया	बल्कि ख़ुशनुमा बना दिए गए	बात	से	महज़ ज़ाहिरी	या	ज़मीन में	उस के इल्म में नहीं	वह जो

مَكْرُهُمْ وَصُدُّوْا عَنِ السَّبِيْلِ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿٣٣﴾

33	कोई हिदायत देने वाला	उस के लिए	तो नहीं	गुमराह करे अल्लाह	और जो - जिस	राह	से	और वह रोक दिए गए	उन के फ़रेब

لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَقُّ ۚ وَمَا

और नहीं	निहायत तक्लीफ़दह	और अलबत्ता आख़िरत का अ़ज़ाब	दुनिया की ज़िन्दगी	में	अ़ज़ाब	उन के लिए

لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ﴿٣٤﴾ مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ؕ

परहेज़गार (जमा)	वादा किया गया	और जो कि	जन्नत	कैफ़ियत	34	कोई बचाने वाला	अल्लाह से	उन के लिए

تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ اُكُلُهَا دَآئِمٌ وَّظِلُّهَا ؕ تِلْكَ عُقْبَى

अन्जाम	यह	और उस का साया	दाइम	उस के फल	नहरें	उस के नीचे	बहती हैं

الَّذِيْنَ اتَّقَوْا ۖ وَّعُقْبَى الْكٰفِرِيْنَ النَّارُ ﴿٣٥﴾ وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ

हम ने उन्हें दी	और वह लोग जो	35	जहन्नम	काफ़िरों	और अन्जाम	परहेज़गारों (जमा)

الْكِتٰبَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمِنَ الْاَحْزَابِ مَنْ يُّنْكِرُ

इन्कार करते हैं	जो	गिरोह	और बाज़	तुम्हारी तरफ़	नाज़िल किया गया	उस से जो	वह ख़ुश होते हैं	किताब

بَعْضَهٗ ؕ قُلْ اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ وَلَآ اُشْرِكَ بِهٖ ؕ اِلَيْهِ

उस की तरफ़	उस का	और न शरीक ठहराऊं	अल्लाह	मैं इबादत करूँ	कि	मुझे हुक्म दिया गया	इस के सिवा नहीं	आप कहदें	उस की बाज़

اَدْعُوْا وَاِلَيْهِ مَاٰبِ ﴿٣٦﴾ وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ حُكْمًا عَرَبِيًّا ؕ وَلَئِنِ

और अगर	अरबी ज़बान में	हुक्म	हम ने उस को नाज़िल किया	और उसी तरह	36	मेरा ठिकाना	और उसी की तरफ़	मैं बुलाता हूँ

اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ

अल्लाह से	तेरे लिए नहीं	इल्म (वहि)	जब कि तेरे पास आगया	बाद	उन की ख़ाहिशात	तू ने पैरवी की

ع ٥ ١١ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا وَاقٍ ﴿٣٧﴾ ع وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ

तुम से पहले	रसूल (जमा)	और अलबत्ता हम ने भेजे	37	और न कोई बचाने वाला	कोई हिमायती

وَجَعَلْنَا لَهُمْ اَزْوَاجًا وَّذُرِّيَّةً ؕ وَمَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِيَ

लाए	कि	किसी रसूल के लिए	और नहीं हुआ	और औलाद	बीवियां	उन को	और हम ने दी

بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ لِكُلِّ اَجَلٍ كِتَابٌ ﴿٣٨﴾ يَمْحُوا اللّٰهُ مَا يَشَآءُ

जो वह चाहता है	मिटा देता है अल्लाह	38	एक तहरीर	हर वादे के लिए	अल्लाह की इजाज़त से	बग़ैर	कोई निशानी

وَيُثْبِتُ ۚ وَعِنْدَهٗٓ اُمُّ الْكِتٰبِ ﴿٣٩﴾ وَاِنْ مَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ

कुछ हिस्सा	तुम्हें दिखा दें हम	और अगर	39	अस्ल किताब (लौहे महफ़ूज़)	उस के पास	और बाक़ी रखता है

الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ وَعَلَيْنَا

और हम पर (हमारा काम)	पहुँचाना	तुम पर (तुम्हारे ज़िम्मे)	तो इस के सिवा नहीं	हम तुम्हें वफ़ात दें	या	हम ने उन से वादा किया	वह जो कि

الْحِسَابُ ﴿٤٠﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَاْتِي الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ؕ

उस के किनारे	से	उस को घटाते	ज़मीन	कि हम चले आते हैं	क्या वह नहीं देखते	40	हिसाब लेना

وَاللّٰهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهٖ ؕ وَهُوَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿٤١﴾

41	हिसाब लेने वाला	जल्द	और वह	उस के हुक्म को	कोई पीछे डालने वाला नहीं	हुक्म फ़रमाता है	और अल्लाह

उन के लिए दुनिया की जिन्दगी में अ़ज़ाब है, अलबत्ता आख़िरत का अ़ज़ाब निहायत तक्लीफ़दह है और उन के लिए कोई अल्लाह से बचाने वाला नहीं। (34)

और उस जन्नत की कैफ़ियत जिस का परहेज़गारों से वादा किया गया है (यह है) उस के नीचे नहरें बहती हैं, उस के फल दाइम (हमेशा) हैं और उस का साया (भी) यह है अन्जाम परहेज़गारों का, और काफ़िरों का अन्जाम जहन्नम है। (35)

और जिन लोगों को हम ने दी है किताब (अहले किताब) वह उस से ख़ुश होते हैं जो तुम्हारी तरफ़ उतारा गया, और बाज़ गिरोह उस की बाज़ (बातों) का इन्कार करते हैं। आप (स) कहदें उस के सिवा नहीं कि मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं अल्लाह की इबादत करूँ, और उस का शरीक न ठहराऊं, मैं उस की तरफ़ बुलाता हूँ और उसी की तरफ़ मेरा ठिकाना है। (36)

और उसी तरह हम ने इस (क़ुरआन) को अरबी ज़बान में हुक्म नाज़िल किया है, और अगर तू ने उन की ख़ाहिशात की पैरवी की उस के बाद जब कि तेरे पास आगया इल्म, न तेरे लिए अल्लाह से (अल्लाह के सामने) कोई हिमायती होगा, न कोई बचाने वाला। (37)

और अलबत्ता हम ने रसूल भेजे तुम से पहले, और हम ने उन को दी बीवियां और औलाद, और किसी रसूल के लिए (इख़्तियार में) नहीं हुआ कि वह लाए कोई निशानी अल्लाह की इजाज़त के बग़ैर, हर वादे के लिए एक तहरीर है। (38)

और अल्लाह जो चाहता है मिटा देता है और बाक़ी रखता है (जो वह चाहता है) और उस के पास लौहे महफ़ूज़ है। (39)

और अगर हम तुम्हें कुछ हिस्सा (उस अ़ज़ाब का) दिखा दें जिस का हम ने उन से वादा किया है, या तुम्हें वफ़ात दे दें, तो इस के सिवा नहीं कि तुम्हारे ज़िम्मे पहुँचाना है और हिसाब लेना हमारा काम है। (40)

क्या वह नहीं देखते? कि हम चले आते हैं ज़मीन को उस के किनारों से घटाते, और अल्लाह हुक्म फ़रमाता है, कोई उस के हुक्म को पीछे डालने वाला नहीं, और वह तेज़ हिसाब लेने वाला है। (41)

وَقَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلِلّٰهِ الْمَكْرُ جَمِيْعًا ؕ يَعْلَمُ

वह जानता है	सब	चाल (तदबीर)	तो अल्लाह के लिए	उन से पहले	उन लोगों ने जो	और चालें चलीं

مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ ؕ وَسَيَعْلَمُ الْكُفّٰرُ لِمَنْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٤٢﴾

42	आक़िबत का घर	किस के लिए	काफ़िर	और अ़नक़रीब जान लेंगे	हर नफ़्स (शख़्स)	जो कमाता है

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَسْتَ مُرْسَلًا ؕ قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ۢ

गवाह	अल्लाह	काफ़ी है	आप (स) कहदें	रसूल	तू नहीं	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	और कहते हैं

بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ۙ وَمَنْ عِنْدَهٗ عِلْمُ الْكِتٰبِ ﴿٤٣﴾ ع ٦ ١٢

43	किताब का इल्म	उस के पास	और जो	और तुम्हारे दरमियान	मेरे दरमियान

آيَاتُهَا ٥٢ ❀ (١٤) سُوْرَةُ اِبْرٰهِيْمَ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٧

रुकूआ़त 7 (14) सूरह इब्राहीम आयात 52

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

الٓرٰ ۟ كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ

नूर की तरफ़	अन्धेरों से	लोग	ताकि तुम निकालो	तुम्हारी तरफ़	हम ने उस को उतारा	एक किताब	अलिफ़ लाम रा

بِاِذْنِ رَبِّهِمْ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ۙ﴿١﴾ اللّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا

जो कुछ	उसी के लिए	वह जो कि	अल्लाह	1	ख़ूबियों वाला	ज़बरदस्त	रास्ता	तरफ़	उन का रब	हुक्म से

فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَوَيْلٌ لِّلْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ شَدِيْدِ ۙ﴿٢﴾

2	सख़्त	अ़ज़ाब	से	काफ़िरों के लिए	और ख़राबी	ज़मीन में	और जो कुछ	आस्मानों में

الَّذِيْنَ يَسْتَحِبُّوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى الْاٰخِرَةِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ

से	और रोकते हैं	आख़िरत पर	दुनिया	ज़िन्दगी	पसन्द करते हैं	वह जो कि

سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ؕ اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍۢ بَعِيْدٍ ﴿٣﴾

3	दूर	गुमराही	में	वही लोग	कजी	और उस में ढून्डते हैं	अल्लाह का रास्ता

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهٖ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ ؕ فَيُضِلُّ اللّٰهُ

फिर गुमराह करता है अल्लाह	उन के लिए	ताकि खोल कर बयान करदे	उस की क़ौम की	ज़बान में	मगर	कोई रसूल	और हम ने नहीं भेजा

مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٤﴾

4	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और वह	जिस को चाहता है	और हिदायत देता है	जिस को वह चाहता है

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اَنْ اَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ

नूर की तरफ़	अन्धेरों से	अपनी क़ौम	तू निकाल	कि	अपनी निशानियों के साथ	मूसा (अ)	और अलबत्ता हम ने भेजा

وَذَكِّرْهُمْ بِاَيّٰمِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿٥﴾

5	शुक्र गुज़ार	हर सब्र करने वाले के लिए	अलबत्ता निशानियां	उस	में	बेशक	अल्लाह के दिन	और याद दिला उन्हें

और जो उन से पहले थे उन्हों ने चालें चलीं तो सारी चाल तो अल्लाह ही की है, वह जानता है जो कमाता है हर शख़्स, और अ़नक़रीब काफ़िर जान लेंगे आक़िबत का घर किस के लिए है। (42)

और काफ़िर कहते हैं: तू रसूल नहीं, आप (स) कह दें, मेरे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह गवाह काफ़ी है, और वह जिस के पास किताब का इल्म है। (43)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, रहम करने वाला है

अलिफ़-लाम-रा - यह एक किताब है, हम ने तुम्हारी तरफ़ उतारी, ताकि तुम लोगों को निकालो उन के रब के हुक्म से अन्धेरों से नूर की तरफ़, ग़ालिब, ख़ूबियों वाले अल्लाह के रास्ते की तरफ़, (1)

उसी के लिए है जो कुछ आस्मानों में है और ज़मीन में है, और काफ़िरों के लिए सख़्त अ़ज़ाब से ख़राबी है। (2)

जो दुनिया की ज़िन्दगी को पसन्द करते हैं आख़िरत पर, और अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं, और उस में कजी ढून्डते हैं, यही लोग दूर की गुमराही में हैं। (3)

और हम ने कोई रसूल नहीं भेजा मगर उस की क़ौम की ज़बान में, ताकि वह उन के लिए (अल्लाह के अहकाम) खोल कर बयान कर दे फिर अल्लाह जिस को चाहता है गुमराह करता है, और जिस को चाहता है हिदायत देता है, और वह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (4)

और अलबत्ता हम ने मूसा (अ) को अपनी निशानियों के साथ भेजा कि अपनी क़ौम को अन्धेरों से रोशनी की तरफ़ निकाल, और उन्हें अल्लाह के (अज़ीम वाक़िआ़त के) दिन याद दिला, बेशक उस में हर इन्तिहाई सब्र करने वाले, शुक्र गुज़ार के लिए निशानियां हैं। (5)

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ

अपने ऊपर	अल्लाह की नेमत	तुम याद करो	अपनी क़ौम को	मूसा (अ)	कहा	और जब

اِذْ اَنْجٰىكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ

बुरा अ़ज़ाब	वह तुम्हें पहुँचाते थे	फ़िरऔ़न की क़ौम	से	जब उस ने नजात दी तुम्हें

وَيُذَبِّحُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ؕ وَفِىْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ

आज़माइश	उस	और में	तुम्हारी औरतें	और ज़िन्दा छोड़ते थे	तुम्हारे बेटे	और ज़ुबह करते थे

مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ﴿٦﴾ وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِنْ شَكَرْتُمْ ع ١٣

तुम शुक्र करोगे	अलबत्ता अगर	तुम्हारा रब	और जब आगाह किया	6	बड़ी	तुम्हारा रब	से

لَاَزِيْدَنَّكُمْ وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ اِنَّ عَذَابِىْ لَشَدِيْدٌ ﴿٧﴾ وَقَالَ

और कहा	7	बड़ा सख़्त	मेरा अ़ज़ाब	बेशक	तुम ने नाशुक्री की	और अलबत्ता अगर	तो मैं ज़रूर तुम्हें और ज़ियादा दूंगा

مُوْسٰٓى اِنْ تَكْفُرُوْٓا اَنْتُمْ وَمَنْ فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ

तो बेशक अल्लाह	सब	ज़मीन में	और जो	तुम	नाशुक्री करोगे	अगर	मूसा (अ)

لَغَنِىٌّ حَمِيْدٌ ﴿٨﴾ اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ مع ٦ عند المتقدمين ١٢

तुम से पहले	वह लोग जो	ख़बर	क्या तुम्हें नहीं आई	8	सब खूबियों वाला	बेनियाज़

قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ ۛ وَالَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۛ لَا يَعْلَمُهُمْ

उन की ख़बर नहीं	उन के बाद	और वह जो	और समूद	और आ़द	नूह (अ) की क़ौम

اِلَّا اللّٰهُ ؕ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرَدُّوْٓا اَيْدِيَهُمْ

अपने हाथ	तो उन्हों ने लौटाए	निशानियों के साथ	उन के रसूल	उन के पास आए	अल्लाह के सिवाए

فِىْٓ اَفْوَاهِهِمْ وَقَالُوْٓا اِنَّا كَفَرْنَا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ

उस के साथ	तुम्हें भेजा गया	वह जो	बेशक हम नहीं मानते	और वह बोले	उन के मुँह	में

وَاِنَّا لَفِىْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَنَآ اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ﴿٩﴾ قَالَتْ رُسُلُهُمْ الثلثة

उन के रसूल	कहा	9	तरद्दुद में डालते हुए	उस की तरफ़	तुम हमें बुलाते हो	उस से जो	शक	अलबत्ता में	और बेशक हम

اَفِى اللّٰهِ شَكٌّ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يَدْعُوْكُمْ

वह तुम्हें बुलाता है	और ज़मीन	आस्मानों	बनाने वाला	शुबाह - शक	क्या अल्लाह में

لِيَغْفِرَ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُؤَخِّرَكُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ

एक मुद्दत मुक़र्ररा	तक	और मोहलत दे तुम्हें	तुम्हारे गुनाह	से (कुछ)	ता कि बख़्शदे तुम्हें

قَالُوْٓا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ؕ تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَصُدُّوْنَا

हमें रोक दो	कि	तुम चाहते हो	हम जैसे	बशर	सिर्फ़	तुम	नहीं	वह बोले

عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا فَاْتُوْنَا بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿١٠﴾

10	रौशन	दलील, मोजिज़ा	पस लाओ हमारे पास	हमारे बाप दादा	पूजते थे	उस से जो

और (याद करो) जब कहा मूसा (अ) ने अपनी क़ौम को, तुम अपने ऊपर अल्लाह की नेमत याद करो, जब उस ने तुम्हें फ़िरऔ़न की क़ौम से नजात दी, वह तुम्हें बुरा अ़ज़ाब पहुँचाते थे, और तुम्हारे बेटों को ज़ुबह करते थे, और तुम्हारी औ़रतों (लड़कियों) को ज़िन्दा छोड़ देते थे, और उस में तुम्हारे रब की तरफ़ से बड़ी आज़माइश थी। (6)

और जब तुम्हारे रब ने आगाह किया, अलबत्ता अगर तुम शुक्र करोगे तो मैं ज़रूर तुम्हें और ज़ियादा दूंगा, अलबत्ता अगर तुम ने नाशुक्री की तो बेशक मेरा अ़ज़ाब बड़ा सख़्त है। (7)

और मूसा (अ) ने कहा अगर नाशुक्री करोगे तुम और जो ज़मीन में है सब के सब, तो बेशक अल्लाह बेनियाज़, सब खूबयों वाला है। (8)

क्या तुम्हें उन लोगों की ख़बर नहीं आई जो तुम से पहले थे (मिसल के लिऐ) क़ौमे नूह (अ), आ़द और समूद, और वह जो उन के बाद हुए, उन की ख़बर (किसी को) नहीं अल्लाह के सिवा, उन के पास उन के रसूल निशानियों के साथ आए, तो उन्हों ने अपने हाथ उन के मुँह में लौटाए (ख़ामोश कर दिया) और बोले तुम्हें जिस (रिसालत) के साथ भेजा गया है हम नहीं मानते, और अलबत्ता तुम हमें जिस की तरफ़ बुलाते हो हम शक में हैं तरद्दुद में डालते हुए। (9)

उन के रसूलों ने कहा क्या तुम्हें ज़मीन और आस्मान के बनाने वाले अल्लाह के बारे में शक है? वह तुम्हें बुलाता है ताकि तुम्हारे कुछ गुनाह बख़्श दे, और एक मुद्दत मुक़र्ररा तक तुम्हें मोहलत दे, वह बोले नहीं तुम सिर्फ़ हम जैसे बशर हो, तुम चाहते हो कि हमें रोक दो जिन को हमारे बाप दादा पूजते थे, पस हमारे पास रौशन दलील (मोजिज़ा) लाओ। (10)

قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ اِنْ نَّحْنُ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَمُنُّ

एहसान करता है	अल्लाह	और लेकिन	तुम जैसे	बशर	सिर्फ़	हम	नहीं	उन के रसूल	उन से	कहा

عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَمَا كَانَ لَنَآ اَنْ نَّاْتِيَكُمْ بِسُلْطٰنٍ

कोई दलील	तुम्हारे पास लाएं	कि	हमारे लिए	और नहीं है	अपने बन्दे	से	जिस पर चाहे

اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١١﴾ وَمَا لَنَآ

हमारे लिए	और क्या	11	मोमिन (जमा)	पस भरोसा करना चाहिए	और अल्लाह पर	अल्लाह के हुक्म से	मगर (बग़ैर)

اَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنَا سُبُلَنَا ؕ وَلَنَصْبِرَنَّ عَلٰى مَآ

जो	पर	और हम ज़रूर सब्र करेंगे	हमारी राहें	और उस ने हमें दिखा दीं	अल्लाह पर	कि हम न भरोसा करें

اٰذَيْتُمُوْنَا ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿١٢﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ع ٢ ١٤

जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	और कहा	12	भरोसा करने वाले	पस भरोसा करना चाहिए	और अल्लाह पर	तुम हमे ईज़ा देते हो

لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِّنْ اَرْضِنَآ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ؕ

हमारे दीन में	तुम लौट आओ	या	अपनी ज़मीन	से	ज़रूर हम तुम्हें निकाल देंगे	अपने रसूलों को

فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٣﴾ وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ الْاَرْضَ

ज़मीन	और अलबत्ता हम तुम्हें आबाद करदेंगे	13	ज़ालिम (जमा)	ज़रूर हम हलाक कर देंगे	उन का रब	उन की तरफ़	तो वहि भेजी

مِنْ بَعْدِهِمْ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِيْ وَخَافَ وَعِيْدِ ﴿١٤﴾ وَاسْتَفْتَحُوْا

और उन्हों ने फ़तह मांगी	14	वईद (एलाने अज़ाब)	और डरा	मेरे रूबरू खड़ा होना	डरा	उस के लिए जो	यह	उन के बाद

وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ﴿١٥﴾ مِّنْ وَّرَآئِهٖ جَهَنَّمُ وَيُسْقٰى مِنْ مَّآءٍ

पानी	से	और उसे पिलाया जाएगा	जहन्नम	उस के पीछे	15	ज़िद्दी	सरकश	हर	और नामुराद हुआ

صَدِيْدٍ ﴿١٦﴾ يَّتَجَرَّعُهٗ وَلَا يَكَادُ يُسِيْغُهٗ وَيَاْتِيْهِ الْمَوْتُ مِنْ

से	मौत	और आएगी उसे	गले से उतार सकेगा उसे	और न	उसे घूंट घूंट पिएगा	16	पीप वाला

كُلِّ مَكَانٍ وَّمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ؕ وَمِنْ وَّرَآئِهٖ عَذَابٌ غَلِيْظٌ ﴿١٧﴾ مَثَلُ

मिसाल	17	सख़्त	अज़ाब	और उस के पीछे	मरने वाला	और न वह	हर तरफ़

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ اَعْمَالُهُمْ كَرَمَادِ ۣاشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ يَوْمٍ عَاصِفٍ ؕ

आन्धी वाला	दिन	में	हवा	उस पर	ज़ोर की चली	राख की तरह	उन के अमल	अपने रब के	वह लोग जो मुन्किर हुए

لَا يَقْدِرُوْنَ مِمَّا كَسَبُوْا عَلٰى شَيْءٍ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ﴿١٨﴾

18	दूर	गुमराही	वह	यह	किसी चीज़ पर	उन्हों ने कमाया	उस से जो	उन्हें कुदरत न होगी

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ

तुम्हें लेजाए	वह चाहे	अगर	हक़ के साथ	और ज़मीन	आस्मानों	पैदा किया	अल्लाह	कि	क्या तू ने न देखा

وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿١٩﴾ وَّمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ﴿٢٠﴾

20	कुछ दुश्वार	अल्लाह पर	यह	और नहीं	19	नई	मख़्लूक़	और लाए

उन के रसूलों ने उन से कहा (बेशक) हम सिर्फ़ तुम जैसे बशर हैं लेकिन अल्लाह अपने बन्दों में से जिस पर चाहे एहसान करता है, और हमारे लिए (हमारा काम) नहीं कि हम अल्लाह के हुक्म के बग़ैर तुम्हारे पास कोई दलील (मोजिज़ा) लाएं, और मोमिनों को अल्लाह पर ही भरोसा करना चाहिए। (11)
और हमे किया हुआ? कि हम अल्लाह पर भरोसा न करें, और उस ने हमें हमारी राहें दिखा दी हैं, और तुम हमें जो ईज़ा देते हो हम उस पर ज़रूर सब्र करेंगे, और भरोसा करने वालों को अल्लाह पर ही भरोसा करना चाहिए। (12)
और काफ़िरों ने अपने रसूलों से कहा हम तुम्हें ज़रूर निकाल देंगे अपनी ज़मीन (मुल्क) से, या तुम हमारे दीन में लौट आओ तो उन के रब ने उन की तरफ़ वहि भेजी कि हम ज़ालिमों को ज़रूर हलाक कर देंगे। (13)
और अलबत्ता हम तुम्हें उन के बाद ज़मीन में ज़रूर आबाद कर देंगे, यह इस लिए है जो डरा मेरे रूबरू खड़ा होने से, और डरा मेरे एलाने अज़ाब से। (14)
और उन्हों ने (अंबिया ने) फ़तह मांगी, और नामुराद हुआ हर सरकश, ज़िद्दी। (15)
उस के पीछे जहन्नम है, और उसे पीप का पानी पिलाया जाएगा। (16)
वह उसे घूंट घूंट पिएगा, और उसे गले से न उतार सकेगा, और उसे मौत आएगी हर तरफ़ से और वह मरेगा नहीं, और उस के पीछे सख़्त अज़ाब है। (17)
उन लोगों की मिसाल जो अपने रब के मुन्किर हुए, उन के अमल राख की तरह हैं कि उस पर आन्धी के दिन ज़ोर की हवा चली (और सब उड़ा लेगई) जो उन्हों ने कमाया उन्हें उस से किसी चीज़ पर कुदरत न होगी, यही है दूर की (परले दरजे की) गुमराही। (18)
क्या तू ने नहीं देखा? कि अल्लाह ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया हक़ के साथ (ठकि ठीक) अगर वह चाहे तुम्हें ले जाए और ले आए कोई नई मख़्लूक़। (19)
और यह अल्लाह पर कुछ दुश्वार नहीं। (20)

وَبَـرَزُوْا لِلّٰهِ جَمِيْعًا فَقَالَ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا

बेशक हम थे	बड़े बनते थे	उन लोगों से जो	कमज़ोर	फिर कहेंगे	सब	अल्लाह के आगे	और वह हाज़िर होंगे

لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ

किसी क़द्र	अल्लाह का अ़ज़ाब	से	हम से	दफ़ा करते हो	तुम	तो क्या	ताबे	तुम्हारे

قَالُوْا لَوْ هَدٰىنَا اللّٰهُ لَهَدَيْنٰكُمْ ؕ سَوَآءٌ عَلَيْنَآ اَجَزِعْنَآ اَمْ

या	ख़्वाह हम घबराएं	हम पर (हमारे लिए)	बराबर	अलबत्ता हम हिदायत करते तुम्हें	अल्लाह	हमें हिदायत करता	अगर	वह कहेंगे

ع ٣ ٩ ١٥ صَبَرْنَا مَا لَنَا مِنْ مَّحِيْصٍ ؑ (٢١) وَقَالَ الشَّيْطٰنُ لَمَّا قُضِيَ الْاَمْرُ

अमर	फ़ैसला हो गया	जब	शैतान	और बोला	21	कोई छुटकारा	नहीं हमारे लिए	हम सब्र करें

اِنَّ اللّٰهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَوَعَدْتُّكُمْ فَاَخْلَفْتُكُمْ ؕ وَمَا كَانَ

था	और न	फिर मैं ने उस के ख़िलाफ़ किया तुम से	और मैं ने वादा किया तुम से	सच्चा वादा	वादा किया तुम से	बेशक अल्लाह

لِيَ عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّآ اَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِيْ ۚ

मेरा	पस तुम ने कहा मान लिया	मैं ने बुलाया तुम्हें	यह कि	मगर	कोई ज़ोर	तुम पर	मेरा

فَلَا تَلُوْمُوْنِيْ وَلُوْمُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ؕ مَآ اَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُصْرِخِيَّ ؕ

फ़र्याद रसी कर सकते हो मेरी	तुम	और न	फ़र्याद रसी कर सकता तुम्हारी	नहीं मैं	अपने ऊपर	और इल्ज़ाम लगाओ तुम	लिहाज़ा न लगाओ मुझ पर इल्ज़ाम तुम

اِنِّيْ كَفَرْتُ بِمَآ اَشْرَكْتُمُوْنِ مِنْ قَبْلُ ؕ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ

उन के लिए	ज़ालिम (जमा)	बेशक	उस से क़ब्ल	तुम ने शरीक बनाया मुझे	उस से जो	बेशक मैं इन्कार करता हूँ

عَذَابٌ اَلِيْمٌ (٢٢) وَاُدْخِلَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

नेक	और उन्हों ने अ़मल किए	जो लोग ईमान लाए	और दाख़िल किए गए	22	दर्दनाक अ़ज़ाब

جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ؕ

अपना रब	हुक्म से	उस में	वह हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे	बहती हैं	बाग़ात

تَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ (٢٣) اَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا

मिसाल	बयान की अल्लाह ने	कैसी	क्या तुम ने नहीं देखा	23	सलाम	उस में	उन का तुहफ़ा-ए-मुलाक़ात

كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ اَصْلُهَا ثَابِتٌ وَّفَرْعُهَا فِي السَّمَآءِ ۙ (٢٤)

24	आस्मान	में	और उस की शाख़	मज़बूत	उस की जड़	पाकीज़ा	जैसे दरख़्त	कलिमाए तय्यबा (पाक बात)

تُؤْتِيْٓ اُكُلَهَا كُلَّ حِيْنٍۢ بِاِذْنِ رَبِّهَا ؕ وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ

मिसाल	अल्लाह	और बयान करता है	अपना रब	हुक्म से	हर वक़्त	अपना फल	वह देता है

لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ (٢٥) وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيْثَةٍ

नापाक बात	और मिसाल	25	वह ग़ौर ओ फ़िक्र करें	ताकि वह	लोगों के लिए

كَشَجَرَةٍ خَبِيْثَةِ ۣاجْتُثَّتْ مِنْ فَوْقِ الْاَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ (٢٦)

26	कुछ भी क़रार	नहीं उस के लिए	ज़मीन	ऊपर	से	उखाड़ दिया गया	मानिंद दरख़्त नापाक

वह सब अल्लाह के आगे हाज़िर होंगे, फिर कहेंगे कमज़ोर उन लोगों से जो बड़े बनते थे, बेशक हम तुम्हारे ताबे थे तो क्या तुम हम से दफ़ा कर सकते हो? किसी क़द्र अल्लाह का अ़ज़ाब, वह कहेंगे अगर अल्लाह हमें हिदायत करता तो अलबत्ता हम तुम्हें हिदायत करते, अब हमारे लिए बराबर है हम घबराएं या सब्र करें, हमारे लिए कोई छुटकारा नहीं। (21)

और (रोज़े हिसाब) जब तमाम अमूर (कामों) का फ़ैसला हो गया शैतान बोला बेशक अल्लाह ने तुम से सच्चा वादा किया था, और मैं ने (भी) तुम से वादा किया, फिर मैं ने तुम से उस के ख़िलाफ़ किया, और न था मेरा तुम पर कोई ज़ोर, मगर यह कि मैं ने तुम्हें बुलाया, और तुम ने मेरा कहा मान लिया, लिहाज़ा तुम मुझ पर कुछ इल्ज़ाम न लगाओ, इल्ज़ाम अपने ऊपर लगाओ, न मैं तुम्हारी फ़र्याद रसी कर सकता हूँ और न तुम मेरी फ़र्याद रसी कर सकते हो, बेशक मैं इन्कार करता हूँ उस का जो तुम ने इस से क़ब्ल मुझे शरीक बनाया, बेशक ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (22)

और दाख़िल किए गए वह लोग जो ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए बाग़ात में, उन के नीचे नहरें बहती हैं, वह हमेशा रहेंगे उस में अपने रब के हुक्म से, उस में उन का तुहफ़ाए मुलाक़ात "सलाम" है। (23)

क्या तुम ने नहीं देखा? अल्लाह ने कैसी मिसाल बयान की है पाक बात की? जैसे पाकीज़ा पेड़, उस की जड़ मज़बूत और उस की शाख़ आस्मान में, (24)

वह देता है हर वक़्त अपना फल अपने रब के हुक्म से, और अल्लाह लोगों के लिए मिसालें बयान करता है, ताकि वह ग़ौर ओ फ़िक्र करें। (25)

और नापाक बात की मिसाल नापाक पेड़ की तरह है जिसे ज़मीन के ऊपर से उखाड़ दिया गया, उस के लिए कुछ भी क़रार नहीं। (26)

يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا

दुनिया की ज़िन्दगी	में	मज़बूत	बात से	वह लोग जो ईमान लाए (मोमिन)	अल्लाह	मज़बूत रखता है

ع ٤ ١٦ وَفِى الْاٰخِرَةِ ۚ وَيُضِلُّ اللّٰهُ الظّٰلِمِيْنَ ۙ۬ وَيَفْعَلُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ﴿٢٧﴾

27	जो चाहता है	अल्लाह	और करता है	ज़ालिम (जमा)	अल्लाह	और भटका देता है	और आख़िरत में

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ بَدَّلُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ كُفْرًا وَّاَحَلُّوْا قَوْمَهُمْ

अपनी क़ौम	और उतारा	नाशुक्री से	अल्लाह की नेमत	बदल दिया	वह जिन्हों ने	को	क्या तुम ने नहीं देखा

دَارَ الْبَوَارِ ﴿٢٨﴾ ۙ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۭ وَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿٢٩﴾ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ

और उन्हों ने ठहराए अल्लाह के लिए	29	ठिकाना	और बुरा	उस में दाख़िल होंगे	जहन्नम	28	तबाही का घर

اَنْدَادًا لِّيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِهٖ ۭ قُلْ تَمَتَّعُوْا فَاِنَّ مَصِيْرَكُمْ

तुम्हारा लौटना	फिर बेशक	फ़ाइदा उठा लो	कह दें	उस का रास्ता	से	ताकि वह गुमराह करें	शरीक

اِلَى النَّارِ ﴿٣٠﴾ قُلْ لِّعِبَادِىَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ

नमाज़	क़ाइम करें	ईमान लाए	वह जो कि	मेरे बन्दों से	कह दें	30	जहन्नम	तरफ़

وَيُنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِىَ

कि आजाए	उस से क़ब्ल	और ज़ाहिर	छुपा कर	हम ने उन्हें दिया	उस से जो	और ख़र्च करें

يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خِلٰلٌ ﴿٣١﴾ اَللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَ

उस ने पैदा किया	वह जो	अल्लाह	31	और न दोस्ती	उस में	न ख़रीद ओ फ़रोख़्त	वह दिन

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ

उस से	फिर निकाला	पानी	आस्मान से	और उतारा	और ज़मीन	आस्मान (जमा)

مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِىَ فِى الْبَحْرِ

दर्या में	ताकि चले	कश्ती	तुम्हारे लिए	और मुसख़्ख़र किया	तुम्हारे लिए	रिज़्क़	फल (जमा)	से

بِاَمْرِهٖ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْاَنْهٰرَ ﴿٣٢﴾ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ

और चाँद	सूरज	तुम्हारे लिए	और मुसख़्ख़र किया	32	नहरें (नदियां)	तुम्हारे लिए	और मुसख़्ख़र किया	उस के हुक्म से

دَآئِبَيْنِ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ﴿٣٣﴾ ۚ وَاٰتٰىكُمْ مِّنْ كُلِّ مَا

जो	हर चीज़	से	और उस ने तुम्हें दी	33	और दिन	रात	तुम्हारे लिए	और मुसख़्ख़र किया	एक दस्तूर पर चलने वाले

سَاَلْتُمُوْهُ ۭ وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ۭ اِنَّ الْاِنْسَانَ

इन्सान	बेशक	उसे शुमार में न लासकोगे	अल्लाह	नेमत	गिनने लगो तुम	और अगर	तुम ने उस से मांगी

ع ٥ ١٧ لَظَلُوْمٌ كَفَّارٌ ﴿٣٤﴾ ع وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ رَبِّ اجْعَلْ

बना दे	ऐ हमारे रब	इब्राहीम (अ)	कहा	और जब	34	नाशुक्रा	बेशक बड़ा ज़ालिम

هٰذَا الْبَلَدَ اٰمِنًا وَّاجْنُبْنِىْ وَبَنِىَّ اَنْ نَّعْبُدَ الْاَصْنَامَ ﴿٣٥﴾ ۭ

35	बुत (जमा)	हम परस्तिश करें	कि	और मेरी औलाद	और मुझे दूर रख	अम्न की जगह	यह शहर

अल्लाह मोमिनों को मज़बूत बात से मज़बूत रखता है, दुनिया की ज़िन्दगी में और आख़िरत में (भी), और अल्लाह ज़ालिमों को भटका देता है, और अल्लाह करता है जो वह चाहता है। (27)

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा? जिन्हों ने अल्लाह की नेमत को नाशुक्री से बदल दिया, और अपनी क़ौम को उतारा तबाही के घर में। (28)

वह जहन्नम है वह उस में दाख़िल होंगे और वह बुरा ठिकाना है। (29)

और उन्हों ने अल्लाह के लिए शरीक ठहराए ताकि वह उस के रास्ते से गुमराह करें, आप (स) कह दें, फ़ाइदा उठा लो, बेशक तुम्हारा लौटना (बाज़गश्त) जहन्नम की तरफ़ है। (30)

आप (स) मेरे उन बन्दों से कह दें जो ईमान लाए कि वह नमाज़ क़ाइम करें और उस में से ख़र्च करें जो मैं ने उन्हें दिया है छुपा कर और ज़ाहिरी तौर पर, उस से क़ब्ल कि वह दिन आजाए जिस में न ख़रीद ओ फ़रोख़्त होगी और न दोस्ती। (31)

अल्लाह है जिस ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया, और आस्मान से पानी उतारा, फिर उस से निकाला तुम्हारे लिए फलों से रिज़्क़, और तुम्हारे लिए कश्ती को मुसख़्ख़र (ताबे फ़रमान) किया ताकि उस (अल्लाह) के हुक्म से दर्या में चले और मुसख़्ख़र किया तुम्हारे लिए नहरों को। (32)

और तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र किया सूरज और चाँद को कि वह एक दस्तूर पर चल रहे हैं, और तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र किया रात और दिन को, (33)

और उस ने तुम्हें दी हर चीज़ जो तुम ने उस से मांगी, और अगर तुम अल्लाह की नेमत गिनने लगो तुम उसे शुमार में न लासकोगे, बेशक इन्सान बड़ा ज़ालिम, नाशुक्रा है। (34)

और जब इब्राहीम (अ) ने कहा ऐ हमारे रब! बनादे इस शहर को अम्न की जगह, और मुझे और मेरी औलाद को उस से दूर रख कि हम बुतों की परस्तिश करने लगें। (35)

رَبِّ اِنَّهُنَّ اَضْلَلْنَ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ ۚ فَمَنْ

पस जो - जिस	लोग	से	बहुत	उन्हों ने गुमराह किया	बेशक वह	ऐ मेरे रब

تَبِعَنِيْ فَاِنَّهٗ مِنِّيْ ۚ وَمَنْ عَصَانِيْ فَاِنَّكَ غَفُوْرٌ

बख़्शने वाला	तो बेशक तू	मेरी नाफ़रमानी की	और जो - जिस	मुझ से	बेशक वह	मेरी पैरवी की

رَّحِيْمٌ ﴿٣٦﴾ رَبَّنَآ اِنِّيْٓ اَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِيْ بِوَادٍ غَيْرِ

बग़ैर	मैदान	अपनी औलाद	से - कुछ	मैं ने बसाया	बेशक मैं	ऐ हमारे रब	36	निहायत मेहरबान

ذِيْ زَرْعٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ ۙ رَبَّنَا لِيُقِيْمُوا

ताकि क़ाइम करें	ऐ हमारे रब	एहतिराम वाला	तेरा घर	नज़्दीक	खेती वाली

الصَّلٰوةَ فَاجْعَلْ اَفْئِدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِيْٓ اِلَيْهِمْ

उन की तरफ़	वह माइल हों	लोग	से	दिल (जमा)	पस कर दे	नमाज़

وَارْزُقْهُمْ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُوْنَ ﴿٣٧﴾ رَبَّنَآ

ऐ हमारे रब	37	शुक्र करें	ताकि वह	फल (जमा)	से	और उन्हें रिज़्क़ दे

اِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِيْ وَمَا نُعْلِنُ ۭ وَمَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ

अल्लाह पर	छुपी हुई	और नहीं	हम ज़ाहिर करते हैं	और जो	जो हम छुपाते हैं	तू जानता है	बेशक तू

مِنْ شَيْءٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاۗءِ ﴿٣٨﴾ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ

वह जो - जिस	अल्लाह के लिए	तमाम तारीफ़ें	38	आस्मान	में	और न	ज़मीन मे	चीज़	से - कोई

وَهَبَ لِيْ عَلَى الْكِبَرِ اِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ ۭ اِنَّ رَبِّيْ لَسَمِيْعُ

अलबत्ता सुनने वाला	मेरा रब	बेशक	और इस्हाक़ (अ)	इस्माइल (अ)	बुढ़ापा	पर - में	बख़्शा मुझे

الدُّعَاۗءِ ﴿٣٩﴾ رَبِّ اجْعَلْنِيْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ ۣ

मेरी औलाद	और से - को	नमाज़	क़ाइम करने वाला	मुझे बना	ऐ मेरे रब	39	दुआ

رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاۗءِ ﴿٤٠﴾ رَبَّنَا اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ

और मेरे माँ बाप को	मुझे बख़्शदे	ऐ हमारे रब	40	दुआ	और क़ुबूल फ़रमा	ऐ हमारे रब

ع ٦ ١٨ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ ﴿٤١﴾ ع وَلَا تَحْسَبَنَّ

तुम हरगिज़ गुमान करना	और न	41	हिसाब	क़ाइम होगा	जिस दिन	और मोमिनों को

اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ ۭ اِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ

उन्हें मोहलत देता है	सिर्फ़	ज़ालिम (जमा)	वह करते हैं	उस से जो	बेख़बर	अल्लाह

لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيْهِ الْاَبْصَارُ ﴿٤٢﴾ مُهْطِعِيْنَ مُقْنِعِيْ

उठाए हुए	वह दौड़ते होंगे	42	आँखें	उस में	खुली रह जाएगी	उस दिन तक

رُءُوْسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ اِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ ۚ وَاَفْـِٕدَتُهُمْ هَوَاۗءٌ ﴿٤٣﴾

43	उड़े हुए	और उन के दिल	उन की निगाहें	उन की तरफ़	न लौट सकेंगी	अपने सर

ऐ मेरे रब! बेशक उन्हों ने बहुत से लोगों को गुमराह किया, पस जिस ने मेरी पैरवी की, बेशक वह मुझ से है, और जिस ने मेरी नाफ़रमानी की तो बेशक तू बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (36)

ऐ हमारे रब! बेशक मैं ने अपनी कुछ औलाद को एक बग़ैर खेती वाले मैदान में बसाया है तेरे एहतिराम वाले घर के नज़्दीक, ऐ हमारे रब! ताकि वह नमाज़ क़ाइम करें, पस लोगों के दिलों को (ऐसा) कर दे कि वह उन की तरफ़ माइल हों, और उन्हें फलों से रिज़्क़ दे, ताकि वह शुक्र करें। (37)

ऐ हमरे रब! बेशक तू जानता है जो हम छुपाते हैं और जो ज़ाहिर करते हैं, और अल्लाह पर कोई चीज़ छुपी हुई नहीं ज़मीन में और न आस्मान में। (38)

तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, जिस ने मुझे बुढ़ापे में बख़्शा इस्माइल (अ) और इस्हाक़ (अ), बेशक मेरा रब दुआ सुनने वाला है। (39)

ऐ मेरे रब! मुझे बना नमाज़ क़ाइम करने वाला, और मेरी औलाद को भी, ऐ हमारे रब! मेरी दुआ क़ुबूल फ़रमा ले। (40)

ऐ हमारे रब! जिस दिन हिसाब क़ाइम होगा (रोज़े हिसाब) मुझे और मेरे माँ बाप को, और मोमिनों को बख़्शदे। (41)

और तुम हरगिज़ गुमान न करना कि अल्लाह उस से बेख़बर है जो वह ज़ालिम करते हैं। वह सिर्फ़ उन्हें उस दिन तक मोहलत देता है, जिस में खुली रह जाएगी आँखें। (42)

वह अपने सर (ऊपर को) उठाए हुए दौड़ते होंगे, उन की निगाहें उन की तरफ़ न लौट सकेंगी, और उन के दिल (ख़ौफ़ से) उड़े हुए होंगे। (43)

وَاَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَاْتِيْهِمُ الْعَذَابُ فَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا

उन्हों ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम)	वह लोग जो	तो कहेंगे	अज़ाब	उन पर आएगा	वह दिन	लोग	और डराओ

رَبَّنَآ اَخِّرْنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ نُّجِبْ دَعْوَتَكَ وَنَتَّبِعِ الرُّسُلَ ؕ

रसूल (जमा)	और हम पैरवी करें	तेरी दावत	हम कुबूल करलें	थोड़ी	एक मुद्दत	तरफ़	हमें मोहलत दे	ऐ हमारे रब

اَوَلَمْ تَكُوْنُوْٓا اَقْسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلُ مَا لَكُمْ مِّنْ زَوَالٍ ۙ ﴿٤٤﴾ وَّسَكَنْتُمْ

और तुम रहे थे	44	कोई ज़वाल	तुम्हारे लिए नहीं	इस से क़ब्ल	तुम क़स्में खाते	तुम थे	या-क्या न

فِيْ مَسٰكِنِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ

उन से	हम ने (सुलूक) किया	कैसा	तुम पर	और ज़ाहिर हो गया	अपनी जानों पर	ने ज़ुल्म किया	जिन लोगों	घर (जमा)	में

وَضَرَبْنَا لَكُمُ الْاَمْثَالَ ﴿٤٥﴾ وَقَدْ مَكَرُوْا مَكْرَهُمْ وَعِنْدَ اللّٰهِ مَكْرُهُمْ ؕ

उन के दाओ	और अल्लाह के आगे	अपने दाओ	और उन्हों ने दाओ चले	45	मिसालें	तुम्हारे लिए	और हम ने बयान की

وَاِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ لِتَزُوْلَ مِنْهُ الْجِبَالُ ﴿٤٦﴾ فَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ مُخْلِفَ

ख़िलाफ़ करेगा	अल्लाह	पस तू हरगिज़ ख़याल न कर	46	पहाड़	उस से	कि टल जाए	उन का दाओ	था	और अगरचे

وَعْدِهٖ رُسُلَهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿٤٧﴾ يَوْمَ تُبَدَّلُ الْاَرْضُ

ज़मीन	बदल दी जाएगी	जिस दिन	47	बदला लेने वाला	ज़बरदस्त	बेशक अल्लाह	अपने रसूल	अपना वादा

غَيْرَ الْاَرْضِ وَالسَّمٰوٰتُ وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿٤٨﴾ وَتَرَى

और तू देखेगा	48	सख़्त क़हर वाला	यकता	अल्लाह के आगे	वह निकल खड़े होंगे	और आस्मान (जमा)	मुख़्तलिफ़ ज़मीन

الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ مُّقَرَّنِيْنَ فِى الْاَصْفَادِ ﴿٤٩﴾ سَرَابِيْلُهُمْ مِّنْ

से - के	उन के कुर्ते	49	ज़न्जीरें	में	बाहम जकड़े हुए	उस दिन	मुज्रिम (जमा)

قَطِرَانٍ وَّتَغْشٰى وُجُوْهَهُمُ النَّارُ ۙ ﴿٥٠﴾ لِيَجْزِيَ اللّٰهُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا

जो	हर जान	अल्लाह	ताकि बदला दे	50	आग	उन के चहरे	और ढांप लेगी	गन्धक

كَسَبَتْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿٥١﴾ هٰذَا بَلٰغٌ لِّلنَّاسِ وَلِيُنْذَرُوْا

और ताकि वह डराए जाएं	लोगों के लिए	यह पहुँचा देना (पैग़ाम)	51	तेज़ हिसाब लेने वाला	बेशक अल्लाह	उस ने कमाया (कमाई)

بِهٖ وَلِيَعْلَمُوْٓا اَنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّلِيَذَّكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿٥٢﴾ ع ١١ ١٩

52	अक़्ल वाले	और ताकि नसीहत पकड़ें	यकता	वह माबूद	उस के सिवा नहीं	और ताकि वह जान लें	उस से

آيَاتُهَا ٩٩ ❀ (١٥) سُوْرَةُ الْحِجْرِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٦

रुकूआत 6 — (15) सूरतुल हिज्र — पत्थर — आयात 99

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

الٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ وَقُرْاٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿١﴾

1	वाज़ेह - रौशन	और क़ुरआन	किताब	आयतें	यह	अलिफ़ लाम रा

और लोगों को उस दिन से डराओ जब उन पर अज़ाब आएगा, तो कहेंगे ज़ालिम, ऐ हमारे रब! हमें एक थोड़ी मुद्दत के लिए मोहलत दे दे कि हम तेरी दावत कुबूल कर लें, और हम पैरवी करें रसूलों की, क्या तुम उस से क़ब्ल क़स्में न खाते थे? कि तुम्हारे लिए कोई ज़वाल नहीं। (44)

और तुम रहे थे उन लोगों के घरों में जिन्हों ने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया था, और तुम पर ज़ाहिर हो गया था कि हम ने उन से कैसा सुलूक किया और हम ने तुम्हारे लिए मिसालें बयान कीं। (45)

और उन्हों नें अपने दाओ चले, और अल्लाह के आगे हैं उन के दाओ, अगरचे उन का दाओ ऐसा था कि उस से पहाड़ टल जाते। (46)

पस तू हरगिज़ ख़याल न कर कि अल्लाह ख़िलाफ़ करेगा अपने रसूलों से अपना वादा, बेशक अल्लाह ज़बरदस्त बदला लेने वाला है। (47)

जिस दिन (उस) ज़मीन से बदल दी जाएगी और ज़मीन और (बदले जाएंगे) आस्मान, और वह सब अल्लाह यकता सख़्त क़हर वाले के आगे निकल खड़े होंगे। (48)

और तू देखेगा मुज्रिम उस दिन बाहम ज़न्जीरों में जकड़े होंगे। (49)

उन के कुर्ते गन्धक के होंगे, और आग उन के चहरे ढांपे होगी। (50)

ताकि अल्लाह हर जान को उस की कमाई (आमाल) का बदला दे, बेशक अल्लाह तेज़ हिसाब लेने वाला है। (51)

यह (क़ुरआन) लोगों के लिए पैग़ाम है, और ताकि वह उस से डराए जाएं, और ताकि वह जान लें कि वही माबूद यकता है, और ताकि अक़्ल वाले नसीहत पकड़ें। (52)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, रहम करने वाला है

अलिफ़-लाम-रा - यह आयतें हैं किताब की, और वाज़ेह (रौशन) क़ुरआन की। (1)